A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 27 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 192 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ईरान-इजरायल भू-राजनीति की अनदेखी कर जंग का फैसला नहीं कर सकते

ले. जनरल प्रकाश मेनन (रि)

ईरान और इराक के बीच ताज़ा मुकाबले की खासियत यह थी कि टक्कर दूर से ही ली जा रही थी। दोनों देशों ने अपनी-अपनी फौजी ताकत दुश्मन की सीमा के अंदर जाकर आज़माने की कोशिश की। टकराव का ताज़ा कारण दमिश्क में ईरान के वाणिज्य दूतावास पर एक अप्रैल को इज़रायली हमला बना। ईरान ने अंतर्राष्ट्रीय नियमों और समझौतों के मुताबिक इसे अपनी संप्रभुता पर हमला माना। ईरान ने इसके जवाब में 13 अप्रैल को 300 ड्रोन, क्रूज़ और बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला बोल दिया। इज़रायल का दावा है कि इनमें से 99 फीसदी हथियारों को पहले ही नाकाम कर दिया गया और उसे शायद ही कोई नुकसान पहुंचा।

इसके कुछ घंटे बाद, संयुक्त राहटर में ईरान के मिशन ने एक्स पर बयान जारी किया कि 'मामले को समाप्त माना जा सकता है।' ज़ाहिर है, ईरान हमलों और जवाबी हमलों के इस सिलसिले को खत्म करना चाहता था। 19 अप्रैल को इस्फहान में विस्फोटों की खबर आई। कई लोगों का मानना है कि यह 13 अप्रैल को हुए ईरानी हमले का यह इज़रायल की ओर से जवाब था। इज़रायल ने इन हमलों की कोई ज़िम्मेदारी नहीं ली, लेकिन इटली के विदेश मंत्री एंटोनिओ ताजानी ने कहा कि अमेरिका ने जी-7 के विदेश मंत्रियों को बताया है कि इज़रायल ने उसे 'अंतिम क्षण में जानकारी दी' कि वो ईरान पर हमला करने जा रहा है।

ईरान के विदेश मंत्री हुसैन आमिर-अब्दुल्लाहियां के एक बयान ने इस्फहान में धमाकों को 'मामूली' बताया। ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हुसैन ने चेतावनी दी कि अगर 'इज़रायल ने ईरान के हितों के खिलाफ कार्रवाई की या जवाबी हमला किया तो तेहरान फौरन जवाब देगा और सबसे जोरदार जवाब देगा। अगर नहीं, तो हमारा काम खत्म हुआ।' इस्फहान में हमलों को लेकर इज़रायल की चुप्पी और ईरान के विदेश मंत्री के बयानों से साफ है कि कोई भी पक्ष हालात को बिगाड़ना नहीं चाहता। दोनों पक्षों के इस रुख का कारण शायद वैश्विक भू-राजनीतिक नक्शे में पश्चिम एशिया की रणनीतिक स्थिति के राजनीतिक तथा सामरिक संदर्भ में छिपा है। 'मनमानी' का प्रशिया के पुराने जनरल और सामरिक सिद्धांतकार कार्ल वोन क्लाउज़्विज़ (1780-1831) के नजरिए से क्या मतलब हो सकता है।

क्लाउज़्विज़ की किताब 'ऑन वार' को ऐसा ग्रंथ माना जाता है, जिसकी मूल अवधारणाएं आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने लिखा है: 'युद्ध दुश्मन को हमारी मर्जी के मुताबिक चलने के लिए मजबूर करने का बल प्रयोग का एक तरीका है।' लेकिन, 'मर्जी संप्रभु नहीं हो सकती।' कोई भी पूरा नियंत्रण नहीं रख सकता, दुश्मन की मनमर्जी हो सकती है और वह भी दांव पर लगे मुद्दे तय कर सकता है। युद्ध में कोई भी पक्ष कार्रवाई या फैसला अपनी स्वायत्तता और ज़िम्मेदारी के हिसाब से करता है, जिन्हें उनके संभावित नतीजों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

ईरान और इज़रायल, दोनों के मामले में मनमर्जी का फैसला करने की गुंजाइश राजनीतिक तथा सामरिक शक्तियों की दखल के कारण सीमित है। गाज़ा में इज़रायल का युद्ध और उसे अमेरिकी समर्थन की जड़ें राजनीति में हैं, लेकिन इज़रायल की मनमर्जी अमेरिकी समर्थन पर निर्भरता के कारण सीमित हो जाती है। अमेरिका सऊदी अरब, यूएई और जॉर्डन को ईरान के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए तैयार कर रहा है, लेकिन ऐसा वो सिर्फ इजरायल को अपना समर्थन देने के कारण नहीं कर रहा है। चीन और रूस के साथ ईरान के संबंधों के कारण अमेरिका वैश्विक भू-राजनीतिक क्षेत्र में ईरान को अपने लिए अहम खतरे के रूप में देखता है। ईरान को अलग-थलग करने के अमेरिकी प्रयासों के लिए गाज़ा युद्ध और ईरान-इजरायल युद्ध, दोनों ही प्रतिकूलता पैदा कर सकते हैं।

अमेरिका-इजरायल संबंध बेशक अमेरिका की घरेलू राजनीति पर यहूदी लॉबी के दबदबे से प्रभावित हैं। इस वजह से इज़रायल को अपनी मर्जी से कदम उठाने की हिम्मत हो जाती है, जैसा उसने गाज़ा में उठाया। लेकिन ईरान के मामले में राजनीतिक और रणनीतिक स्थितियां भिन्न हैं और उनके शायद दूरगामी नतीजे हो सकते हैं जो इज़रायल को आगे चलकर बड़ा खतरा पहुंचा सकते हैं।

पश्चिमी देशों की ओर से लागू आर्थिक प्रतिबंधों को लंबे समय से झेल रहे ईरान के लिए खतरा यह है कि पश्चिम एशिया में युद्ध भड़कने से अमेरिका और उसके सहयोगी देश इज़रायल के पक्ष में सामने आ जाएंगे और उसने सीरिया और इराक में हमास, हिज्बुल्लाह, हाउदी, और ऐसे कई और जो अपने भाड़े के गुटों को खड़ा करके जो बढ़त हासिल की है वो कमज़ोर पड़ जाएगी। ईरान चाहेगा कि हमास युद्ध का इज़रायल ने जिस तरह निबटारा किया है उसके कारण अमेरिका-इज़रायल-अरब मुल्कों के बीच सुलह न होने पाए। यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया में उथल-पुथल अमेरिका को चीन से, जिसे उसका प्रमुख दीर्घकालिक खतरा माना जाता है, निबटने के अपने प्रयासों से ध्यान हटा सकते हैं।

ये राजनीतिक संदर्भ विभिन्न पक्षों के रुख तय कर रहे हैं, लेकिन उनके रुख सामरिक संदर्भ से भी प्रभावित हो रहे हैं। ईरान और इज़रायल आपस में सटे पड़ोसी देश नहीं हैं, लेकिन ईरान बाब अल-मंदेब जलडमरूमध्य और होर्मुज़ जलडमरूमध्य में अपने भाड़े के गुटों का इस्तेमाल करके इज़रायल के व्यापार को नुकसान पहुंचा सकता है। इस तरह की कार्रवाई लगभग सभी देशों को प्रभावित कर सकती है। वैश्विक व्यापार पर असर फौजी संघर्षों के प्रतिकूल आर्थिक परिणाम को दर्शाता है। ईरान ने अपनी जिस मुख्य क्षमता का प्रदर्शन किया, वह था हवाई मार्ग से इज़रायल तक अपनी पहुंच बनाने का। ज्यादा अहम बात यह है कि यह देसी क्षमता है जो पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों के बावजूद हासिल की गई है। प्रति 'हथियार' के असर का हिसाब लगाया जाए तो यह छोटा ही निकलेगा, लेकिन बड़ी संख्या में उन्हें एक साथ इस्तेमाल किया जाए तो उसका सामरिक असर हो सकता है और सामरिक मामलों में इस चलन को ज्यादा मान्यता मिल रही है। अगर इज़रायल को इस क्षमता का मुकाबला करना है, तो उसे अंततः ईरान में उस इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमला करना पड़ेगा जहां ऐसी क्षमता का विकास और उसकी तैनाती की जा रही है। तब यह एक बड़े युद्ध में बदल सकता है, जो कोई नहीं चाहता। अपने यहां भी, उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत और पाकिस्तान अपने ऐतिहासिक अनुभवों से विरासत में हासिल वास्तविकता को कबूल कर चुके होंगे।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

लोकसभा चुनाव सेकेंड फेज

केरल-बंगाल में बंपर वोटिंग महाराष्ट्र-बिहार व यूपी में 'सुस्ती'

देश के 13 राज्यों की 88 सीटों पर ईवीएम में कैद हुई प्रत्याशियों की किस्मत

नई दिल्ली (एजेंसी)। 18वीं लोकसभा के चुनाव के लिए सेकेंड फेज की 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 88 सीटों पर वोटिंग संपन्न हो गई है। 5 बजे तक त्रिपुरा में सबसे ज्यादा करीब 76.06 फीसदी वोटिंग हुई। महाराष्ट्र, बिहार और उत्तर प्रदेश मे सबसे कम मतदान हुआ। इससे पहले, छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में बूथ पर ड्यूटी के दौरान एक पुलिसकर्मी ने खुद को गोली मार ली। वह मध्य प्रदेश का रहने वाला है। तृणमूल कांग्रेस ने आरोप लगाया कि बंगाल की दो लोकसभा सीटों बालूरघाट और रायगंज में सेंट्रल फोर्सेस महिलाओं को वोटिंग से रोक रही हैं। बालूरघाट में बंगाल भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार और तृणमूल वर्कर्स के बीच झड़प भी हुई। सेकेंड फेज में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, 5 केंद्रीय मंत्री, 2 पूर्व सीएम और 3 फिल्मी सितारे मैदान में हैं। इसके अलावा राहुल गांधी, शशि थरूर और हेमा मालिनी की सीट पर भी वोटिंग हो रही है। आउटर मणिपुर के कुछ हिस्सों में दोबारा वोटिंग हुई है। चुनाव आयोग ने इस सीट पर दो फेज में चुनाव की घोषणा की थी। 2019 में सेकेंड फेज की सीटों पर सबसे ज्यादा भाजपा को 50 और एनडीए के सहयोगी दलों ने 8 सीटें जीती थीं। कांग्रेस के खाते में 21 सीटें गईं थीं। अन्य को 9 सीटें मिली थीं। चुनाव आयोग के मुताबिक, दूसरे फेज में 1,202 कैंडीडेट्स मैदान में हैं। इनमें 1,098 पुरुष और 102 महिला उम्मीदवार हैं। दो प्रत्याशी थर्ड जेंडर से है। इससे पहले 19 अप्रैल को पहले फेज की 102 सीटों पर वोटिंग हुई थी। आज के बाद 5 फेज की वोटिंग 1 जून तक खत्म होगी।

प्रदेश की 6 सीटों पर 58.35 प्रतिशत मतदान,होशंगाबाद सीट पर सबसे ज्यादा 67.16 प्रति. और रीवा में सबसे कम 48.67प्रति. वोटिंग

लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान संपन्न हो गया है। इस चरण में मध्यप्रदेश की 6 लोकसभा सीटों सतना, रीवा, दमोह, खजुराहो, टीकमगढ़ और होशंगाबाद पर वोटिंग हुई। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि शाम 6 बजे तक प्रदेश के 6 लोकसभा सीट पर 58.35 प्रतिशत वोटिंग हुई है। सबसे ज्यादा होशंगाबाद सीट पर 67.16 प्रतिशत और सबसे कम रीवा सीट पर 48.67 प्रतिशत मतदान हुआ है।

दमोह में घोड़े पर सवार होकर वोट देने आया दूल्हा

- खजुराहो में दो घंटे रुका रहा मतदान, एमपी की 6 सीटों पर वोटिंग संपन्न

भोपाल। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में मध्यप्रदेश की 6 सीटों सतना, रीवा, दमोह, खजुराहो, टीकमगढ़ और होशंगाबाद पर वोटिंग जारी है। इन सीटों पर 58.35 फीसदी वोटिंग हुई है। सबसे ज्यादा होशंगाबाद सीट पर 67.16 फीसदी और सबसे कम रीवा सीट पर 48.67 फीसदी पर मतदान हुआ है। इससे पहले सुबह के समय मतदान केंद्रों पर वोटर्स की लंबी-लंबी लाइन नजर आई। लेकिन जैसे जैसे दिन चढ़ता गया और गर्मी बढ़ी तो पोलिंग बूथों पर मतदाताओं की संख्या में कमी दिखी। हालांकि हर वर्ग के वोटर ने मतदान को लेकर उत्साह दिखाया। युवाओं ने वोटिंग में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।दमोह में एक दूल्हा घोड़े पर सवार होकर मतदान करने पहुँचा।

एससी का आदेश ईवीएम पर ही करना होगा 'विश्वास'

- सुप्रीम कोर्ट ने की ईवीएम-वीवीपैट के 100 फीसदी मिलान की मांग खारिज
- बैलट पेपर से चुनाव नहीं,पर कैंडीडेट की शिकायत पर ईवीएम की जांच होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बैलट पेपर से चुनाव कराने और इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और वीवीपैट स्लिप की 100 फीसदी क्रॉस-चेकिंग कराने से जुड़ी याचिकाएं खारिज कर दीं। लेकिन एक बड़ा फैसला भी दिया। कोर्ट ने ईवीएम के इस्तेमाल के 42 साल के इतिहास में पहली बार जांच का रास्ता खोल दिया। सुनवाई शुक्रवार को हुई और बेंच जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस संजीव खन्ना की थी। दोनों ने एकमत से फैसला सुनाया। इस केस में 3 पक्ष शामिल थे। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म यानी याचिकाकर्ता, चुनाव आयोग, सरकार और अफसर। केस चुनाव और मतदान से जुड़ा है तो राजनीतिक पार्टियां और आम जनता भी जुड़ी हुई है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से आम आदमी की वोट देने की प्रोसेस में कोई बदलाव नहीं होगा। वोटर पोलिंग बूथ जाएगा। अंगुली पर स्याही लगेगी। चुनाव अधिकारी कंट्रोल यूनिट का बटन दबाएगा। वोटर बैलट यूनिट में कैंडिडेट के नाम के सामने का बटन दबाएगा और फिर कुछ सेकेंड तक वीवीपैट की लाइट में अपनी पर्ची देख सकेगा। दूसरे या तीसरे नंबर पर आने वाले किसी कैंडीडेट को शक है तो वह रिजल्ट घोषित होने के 7 दिन के भीतर शिकायत कर सकता है। शिकायत के बाद ईवीएम बनाने वाली कंपनी के इंजीनियर्स इसकी जांच करेंगे। किसी भी लोकसभा क्षेत्र में शामिल विधानसभा क्षेत्रवार की टोटल वीवीपैट में से 5 फीसदी मशीनों की जांच हो सकेगी। इन 5 फीसदी ईवीएम को शिकायत करने वाला प्रत्याशी या उसका प्रतिनिधि चुनेगा। इस जांच का खर्च कैंडीडेट को ही उठाना होगा।

प्रधानमंत्री बोले-यह फैसला विपक्ष के मुंह पर तमाचा

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहार के अररिया में चुनावी सभा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय का फैसला विपक्ष के मुंह पर करारा तमाचा है। विपक्ष को देश से माफी मांगनी चाहिए। इन्होंने बैलेट पेपर लूटकर राज किया। ये ईवीएम हटाना चाहते हैं, इनके सपने चूर-चूर हो गए। चुनाव आयोग के अधिकारी ने फैसले के बाद कहा कि ईवीएम की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने वाली याचिकाओं को अदालतें 40 बार खारिज कर चुकी हैं। अधिकारी ने मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के बयान का जिक्र किया। इसमें राजीव कुमार ने कहा था कि ईवीएम 100 फीसदी सुरक्षित हैं और राजनीतिक दल भी यह जानते हैं कि ये मशीनें सही हैं।

सुप्रभात

मैं सूरज का हरकारा हूँ
अंधेरे के पार
जाता रहता हूँ

मैं हरी घास हूँ
धरती को हरी भरी
बनाता रहता हूँ

मैं एक वृक्ष की डाली हूँ
बच्चों को
झुलाता रहता हूँ

मैं एक पहाड़ के
अंतस से बहता
झरना हूँ
जो सूखी तलहटी को
रस में भिगाता रहता है

मैं एक सपना हूँ
जो सबके सपनों में
रमता रहता है।

– दुर्गाप्रसाद झाला

फ्रांस के जरिए विजय माल्या को वापस लाने की तैयारी

- दावा-भारत ने बेशर्त प्रत्यर्पण मांगा; माल्या की फ्रांस में भी 313 करोड़ की संपत्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार भगोड़े शराब कारोबारी विजय माल्या को देश लाने की कोशिश कर रही है। इसके लिए सरकार ने फ्रांस के अधिकारियों से बना शर्त माल्या को प्रत्यर्पित करने की मांग की है। एक रिपोर्ट में इसकी जानकारी दी। माल्या अभी ब्रिटेन में है, लेकिन भारत इस वक्त हर उस देश से संपर्क कर रहा है जहां माल्या की प्रॉपर्टी है। ऐसा इसलिए जाकी अगर माल्या ब्रिटेन छोड़कर दूसरे देश भागता है तो उसे वहां से भारत लाने में ज्यादा समय न लगे। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत और फ्रांस के बीच में माल्या के प्रत्यर्पण पर बातचीत 15 अप्रैल को काउंटर-टेररिज्म के वर्किंग ग्रुप की एक बैठक के दौरान हुई। हालांकि, इसकी जानकारी अब सामने आई है।

शिवराज बोले- पित्रोदा का बयान कांग्रेस का हिडेन एजेंडा

भोपाल (नप्र)। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा के विरासत टैक्स वाले बयान पर बीजेपी हमलावर है। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा- सैम पित्रोदा सामान्य कांग्रेसी नहीं हैं। वे राहुल गांधी के गुरु हैं। अब जब देश में विरोध हुआ तो कांग्रेस ने बचने का रास्ता ढूंढा है। लेकिन, उनका हिडेन एजेंडा जनता के सामने आ गया है।

शुक्रवार को पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल में अपने आवास पर मीडिया से चर्चा की। कहा- राहुल गांधी और सैम पित्रोदा गुरु और चेले हैं। सैम पित्रोदा स्वर्गीय राजीव गांधी के भी सलाहकार रहे हैं। सैम पित्रोदा जैसे लोग ही कांग्रेस को विचार देते हैं। जिसको कांग्रेस क्रियान्वित करती है।

कांग्रेस अगर सत्ता में आई तो विरासत टैक्स लगा देगी। वे अमेरिका के उदाहरण देते हैं। अमेरिका जैसे देशों में यह प्रावधान है कि अगर मृत्यु हो जाए तो संपत्ति का 55 प्रतिशत हिस्सा सरकार अपने पास ले लेगी। लेकिन, सैम पित्रोदा जी, यह अमेरिका नहीं भारत है। भारत की संस्कृति, भारत के जीवन मूल्य, भारत की परंपराएं अमेरिका की नहीं हैं। भारत, भारत है। यहां किसान हो या गरीब हो वह भी अपना पेट काट-काट कर थोड़े पैसे इसलिए बचाते हैं ताकि उनकी मृत्यु के बाद बच्चों के कुछ देकर जाएं। लेकिन कांग्रेस विरासत टैक्स लगाकर इस परंपरा को खत्म करना चाहती है।

इंदिरा गांधी के निधन के बाद राजीव गांधी ने यह टैक्स खत्म किया था- शिवराज सिंह चौहान ने कहा- यह टैक्स पहले था लेकिन जनता के दबाव में कांग्रेस ने इसको उस समय समाप्त किया था। जब स्वर्गीय इंदिरा गांधी नहीं रही थीं। शायद राजीव गांधी ने मां की संपत्ति उनको मिल जाए इसके लिए इसको हटाया होगा। लेकिन, कांग्रेस को देश के सामने यह स्पष्ट करना पड़ेगा कि उसके इरादे क्या हैं?

कांग्रेस जिस रास्ते पर चल रही, वो खतरनाक है- पूर्व सीएम ने कहा- कांग्रेस जिस रास्ते पर चल रही है वह भारत का रास्ता नहीं है। वो रास्ता खतरनाक है। कांग्रेस एक तरफ विरासत टैक्स लगाने की बात करती है तो दूसरी तरफ कहते हैं कि जाति के जनगणना मेरे जीवन का मिशन है। वे देश और समाज को बांटना चाहते हैं। आर्थिक सर्वेक्षण की बात होती है। इसके पीछे खतरनाक इरादे छिपे हुए हैं। वे इरादे जातियों में देश को बांटने के हैं। वे इरादे दलित, आदिवासी और ओबीसी के अधिकारों को बांट देने के हैं। भारत इसको कभी स्वीकार नहीं करेगा। देश की जनता इसको कभी स्वीकार नहीं करेगी।मैं स्पष्ट रूप से कांग्रेस से, सोनिया गांधी, राहुल गांधी से पूछना चाहता हूं कि केवल किनारा करने से काम नहीं चलेगा। उनके असली इरादे क्या हैं? वे जनता को बताएं। जातिगत जनगणना और आर्थिक सामाजिक और आरक्षण जैसे विषयों पर दलित, ओबीसी और आदिवासियों के अधिकारों को छीनना चाहते हैं। उनको जवाब देना होगा। जनता उनको माफ नहीं करेगी।

सांसद विवेक तन्खा बोले- साहस तो हुआ

इधर, कांग्रेस सांसद विवके तन्खा ने शिवराज सिंह चौहान के आरोपों पर पलटवार किया है। कहा- बीजेपी में अब पीएम मोदी के खिलाफ सच बोलने का साहस तो किसी को हुआ। 2 दिन पहले मोदी जी कह रहे थे कि विरासत टैक्स राजीव गांधी जी ने अपनी संपत्ति बचाने के लिए लगाया था। आज पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने साफ कर दिया कि यह टैक्स जनता के दबाव के चलते कांग्रेस सरकार ने सरकार ने हटाया था। देश जानता है कि कांग्रेस हमेशा जनहितैषी निर्णय लेती रही है। धन्यवाद शिवराज जी ...आपको सच बोलने के लिए। मेरे पिता की मृत्यु 1978 में हुई थी।

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 27 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

तेलंगाना में इंटर स्कूल का रिजल्ट आते ही छाया मातम

- **कुछ घंटों में ही सात बच्चों ने कर ली आत्महत्या, परिजन परेशान**

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना में इंटरमीडिएट के नतीजे घोषित हुए कुछ घंटे ही हुए और अलग-अलग हिस्सों से 7 बच्चों की मौत की खबर है। इन सभी ने कथित तौर पर आत्महत्या की है। पुलिस का कहना है कि जान गंवाने वाले बच्चों की उम्र 17 वर्ष से कम है। खास बात है कि साल 2019 में इंटरमीडिएट नतीजे घोषित होने के बाद कम से कम 22 छात्रों ने खुद्कुशी कर ली थी। रिपोर्ट के मुताबिक, तेलंगाना स्टेट बोर्ड ऑफ इंटरमीडिएट एजुकेशन के नतीजे घोषित होने के 30 घंटों के अंदर कम से कम 7 छात्रों ने कथित तौर पर आत्म हत्या कर ली। रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस अधिकारियों का कहना है कि ऐसी घटनाओं की जानकारी पूरे राज्य से मिल रही है। पहली घटना मंछेरियल जिले के तंदूर से थी, जहां 16 साल के एक छात्र ने आत्महत्या कर ली थी। रिपोर्ट के अनुसार, स्थानीय पुलिस का कहना है कि वह फर्स्ट ईयर में चार विषयों में फेल हो गया था। उसने घर में फांसी लगा ली थी। अन्य घटनाओं में जान गंवाने वाली सभी लड़कियां थीं, जिनकी उम्र 16-17 साल थी। ये सभी एक या एक से ज्यादा परीक्षाओं में फेल हो गईं थीं। खबर है कि ये लड़कियां राजेंद्रनगर, खम्मम, महबूबाबाद और कोल्लूर से आती थीं। खास बातहै कि यह दुखद खबर ऐसे समय पर आई है, जब जेईई मेन एग्जाम में अच्छे नंबर हासिल करने वाले बड़ी संख्या में तेलंगाना से हैं। पूरे देश में 100 पर्सेंटाइल लाने वाले 56 उम्मीदवारों में से 15 तेलंगाना से थे। बीते तीन सालों से तेलंगाना से बड़ी संख्या में टॉपर्स निकल रहे हैं। फरवरी-मार्च में हुई इंटरमीडिएट की परीक्षा में 9.8 लाख छात्र बैठे थे। अब 61.06 फीसदी छात्र प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं के बराबर) के पास हुए। वहीं, 69.46 छात्र दूसरे वर्ष (कक्षा 12वीं के बराबर) के पास हुए।

15 दिन में 40 प्रदर्शन, उम्मीदवारों को गांवों में जाने से रोका

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में भाजपा उम्मीदवारों को लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर प्रचार करने में मुश्किलें पेश आ रही हैं। खासतौर से ग्रामीण हिस्सों में, जहां विभिन्न किसान संगठनों ने राज्य में केंद्र की सत्तारूढ़ पार्टी के उम्मीदवारों को आने की इजाजत नहीं देने की अपील की है। बीजेपी अब तक पंजाब की 13 सीटों में से 9 पर अपने उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। मालूम हो कि यहां कि सभी सीटों पर सातवें और आखिरी चरण में 1 जून को वोट डाले जाएंगे। अगर बीते 15 दिनों की बात करें तो यहां भाजपा उम्मीदवारों को विभिन्न किसान समूहों के करीब 40 विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा है। उन्होंने न केवल बीजेपी विरोधी नारे लगाए और काले झंडे दिखाए, बल्कि कई मौकों पर उनके साथ धक्का-मुक्की भी हुई। संयुक्त किसान मोर्चा ने भाजपा उम्मीदवारों को विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार करने की इजाजत नहीं देने की अपील की है। पंजाब पुलिस की खुफिया शाखा के आंकड़ों के मुताबिक, सबसे ज्यादा 15 विरोध प्रदर्शन

फरीदकोट निर्वाचन क्षेत्र में हुए हैं। यहां से भाजपा ने हंसराज हंस को चुनावी मैदान में उतारा है। उन्होंने 4 अप्रैल को अपना प्रचार अभियान शुरू किया। इसके बाद से गायक-राजनेता को लगभग हर दिन किसान संघों के विरोध का सामना करना पड़ा है। पिछले बुधवार को अरैनवाला गांव में उत्तर पश्चिम दिल्ली के निवर्तमान सांसद हंसराज को किसानों ने रैली स्थल तक पहुंचने से रोक दिया। ऐसी स्थिति में एक एसपी-रैंक अधिकारी के नेतृत्व में बड़ी पुलिस इकाई को हस्तक्षेप करना पड़ा। इस दौरान 25 से ज्यादा प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया। इस बीच, पंजाब कांग्रेस के 3 पूर्व नेताओं को केंद्र सरकार ने वाय कैटेगरी की वीआईपी सुरक्षा मुहैया कराई है जिसके तहत इनकी सुरक्षा में अर्धसैनिक बलों के कमांडो तैनात रहेंगे। इन तीन नेताओं में से 2 भाजपा में शामिल हो चुके हैं। सूत्रों ने बताया कि विक्रमजीत सिंह चौधरी, उनकी मां करमजीत कौर चौधरी और तजिंदर सिंह बिट्टू को केंद्रीय खुफिया एजेंसियों द्वारा खतरे का पता चला। इसे देखते हुए वाई श्रेणी की सुरक्षा दी गई है।

ईरान के साथ ट्रेड करने वाली 3 भारतीय कंपनियां बैन

- अमेरिका बोला-ईरान इनके जरिए रूस को ड्रोन्स दे रहा, अवैध व्यापार में भी शामिल

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने ईरान के साथ व्यापार करने पर भारत की तीन कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन कंपनियों

पर आरोप है कि ये ईरानी सेना के साथ अवैध व्यापार और उनके लिए ड्रोन्स ट्रांसफर करने का काम करती थीं। अमेरिका के ट्रेजरी विभाग ने बताया कि यह बैन भारत के अलावा कई दूसरे देशों की कंपनियों, लोगों और जहाजों पर लगाया गया है। ये सभी गुप्त तरह से रूस तक ईरानी ड्रोन्स की डिलीवरी में अहम भूमिका निभाते हैं।

बृजभूषण को कोर्ट से झटका अब टिकट पर भी छाई 'आंच'

- **पहलवानों से यौन शोषण मामले में दायर याचिका अदालत ने की खारिज**

गोंडा (एजेंसी)। यूपी की कैसरगंज लोकसभा सीट से भाजपा के सांसद बृजभूषण शरण सिंह को महिला पहलवानों से यौन उत्पीड़न के आरोपों में झटका लगा है। दिल्ली की अदालत ने उनकी ओर से दाखिल उस अर्जी को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने मांग की थी कि उनके ऊपर लगे आरोपों की और जांच की जाए। ऐसे में उन पर अब यौन उत्पीड़न केस में आरोप तय करने का रास्ता साफ हो गया है।

अदालत के इस फैसले से बृजभूषण शरण सिंह की चुनावी उम्मीदों को भी करारा झटका लगा है। भाजपा सूत्रों के अनुसार पार्टी चाहती है कि बृजभूषण शरण सिंह पर यदि कानूनी कार्रवाई आगे बढ़ती है तो वह खुद चुनाव न लड़ें। इसकी बजाय परिवार के ही किसी सदस्य यानी पत्नी या बेटे को मौका दें। ऐसी स्थिति में अदालत के फैसले के बाद अब लगता है कि बृजभूषण शरण सिंह का टिकट भी कट सकता है। खुद बृजभूषण शरण सिंह के तेवर भी इसके संकेत दे रहे हैं। उन्होंने पिछले दिनों टिकट के सवाल पर कहा भी था कि जो भगवान राम चाहेंगे, वही होगा। यही नहीं उनका कहना था कि पार्टी ने अब तक दूल्हा तय नहीं किया है, लेकिन जिसे भी उतारा जाएगा, वह बड़ी जीत हासिल करेगा। उनके बयान में जिसे भी उतारा जाएगा से यह अर्थ निकाला गया था कि शायद अब वह अपने अलावा परिवार के ही किसी सदस्य को लड़ाने के लिए तैयार हो गए हैं।

- **सांसद ने दोबारा जांच की मांग की थी, कोर्ट 7 मई को आरोप तय करेगी**

राहुल गांधी बोले-उन्होंने 10 साल में गरीबों का पैसा छीना

आजकल मोदी घबराए हुए हैं, उनके आंसू निकल आएंगे

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कर्नाटक के बीजापुर में चुनावी रैली के दौरान अपने संबोधन में कहा कि आजकल पीएम नरेंद्र मोदी अपने भाषण के दौरान काफी घबराए हुए रहते हैं। शायद कुछ दिनों में स्टेज पर उनके आंसू निकल आएं। राहुल ने कहा- पीएम मोदी ने पिछले 10 साल में गरीबों से सिर्फ पैसा छीना है। उन्होंने सिर्फ 20-25 लोगों को अरबपति बनाया है। उन अरबपतियों के पास उतना धन है, जितना 70 करोड़ हिंदुस्तानियों के पास है। हिंदुस्तान में 1 फीसदी ऐसे लोग हैं, जो 40 फीसदी धन कंट्रोल करते हैं। कांग्रेस सांसद ने आगे कहा- मोदी कुछ लोगों को अरबपति बनाते हैं, कांग्रेस सरकार करोड़ों लोगों को लखपति बनाएगी। कांग्रेस बेरोजगारी

और महंगाई मिटाकर आपको भागीदारी देगी। जितना पैसा मोदी ने अरबपतियों को दिया है, उतना पैसा हम गरीबों को देंगे। राहुल ने कहा- यह लोकसभा चुनाव कोई सामान्य चुनाव नहीं है। यह पिछले चुनावों से अलग है, क्योंकि भारत के इतिहास में पहली बार एक पार्टी (भाजपा) और एक व्यक्ति (भाजपा) भारत के संविधान और लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी तरफ, कांग्रेस और इंडिया गठबंधन संविधान को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि भारत के संविधान ने लोगों को अधिकार, आवाज और आरक्षण दिया है। संविधान से पहले भारत पर राजा-महाराजाओं का शासन था। अगर आज भारत के गरीबों, पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के पास अधिकार हैं, आवाज है, तो ये संविधान ने दी है। राहुल से पहले पीएम मोदी 20 अप्रैल को कर्नाटक गए थे। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सरकार ने बेंगलुरु को टैंकर माफिया के हवाले कर दिया है।

एससी में याचिका, नोटा को ज्यादा वोट तो चुनाव रद्द हो

चुनाव आयोग को नोटिस, सूरत में बीजेपी कैंडीडेट की निर्विरोध जीत से उठा मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने नोटा से जुड़ी एक याचिका पर चुनाव आयोग को नोटिस जारी किया है। याचिका मोटिवेशनल स्पीकर शिव खेड़ा ने लगाई, जिसमें आयोग को यह निर्देश देने की मांग की गई है कि यदि नोटा (नन ऑफ द अबव) को किसी कैंडीडेट से ज्यादा वोट मिलते हैं, तो उस सीट पर हुए चुनाव को रद्द कर दिया जाए, साथ ही नए सिरे से चुनाव कराए जाएं। याचिका में यह नियम बनाने की भी मांग की गई है कि नोटा से कम वोट पाने वाले उम्मीदवारों को 5 साल के लिए सभी चुनाव लड़ने से बैन कर दिया

जाए। साथ ही नोटा को एक काल्पनिक उम्मीदवार के तौर पर देखा जाए। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच शुक्रवार को शिव खेड़ा की याचिका पर सुनवाई करने के लिए तैयार हो गई है।

शादी में सिलेंडर ब्लास्ट.. एक ही परिवार के 6 की मौत

- दरभंगा में बारातियों की आतिशबाजी से शामियाने में लगी आग, रसोई तक पहुंची चिंगारी

दरभंगा (एजेंसी)। दरभंगा में शादी के दौरान सिलेंडर ब्लास्ट होने से 6 लोगों की मौत हो गई है। हादसा गुरुवार रात 11 बजे के बाद हुआ। गांव के लोगों ने बताया की छगन पासवान की बेटी की शादी थी। बारात को पड़ोसी रामचंद्र पासवान के आवासीय

परिसर में ठहराया गया था। इस दौरान बारातियों ने जमकर आतिशबाजी की। पटाखों की चिंगारी से शामियाने में आग लग गई। पास में ही खाना बन रहा था। देखते ही देखते आग सिलेंडर तक जा पहुंची। सिलेंडर में आग लगते ही ब्लास्ट हो गया। हादसे के बाद दूल्हा-दुल्हन को पास के ही मंदिर में ले जाया गया। वहां दोनों की शादी हुई। इसी दौरान रामचंद्र पासवान के दरवाजे पर रखे डीजल के स्टॉक में भी आग लग गई। इसमें रामचंद्र पासवान के परिवार के 6 लोगों की मौत हो गई। हादसे में रामचंद्र पासवान के बेटे, बहू, बेटी, 2 नाती, 1 नतिनी ने दम तोड़ दिया।

अमानवीयता

साढ़े तीन साल पहले कोविड से मौत, शव रखकर भूला प्रशासन

- 1000 दिन बाद 'कंकाल' का अंतिम संस्कार, किसी ने नहीं ली सुध

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से कोरोनाकाल की बुरी यादों को ताजा करने वाली तस्वीर सामने आई है। साढ़े 3 साल बाद कोरोना की वजह से हुई मौत के शवों का अंतिम संस्कार किया गया है। साल 2020 में कोरोना वायरस की चपेट में आकर जान गंवाने वाले तीन लोगों के शवों का करीबन 1000 दिन बाद अग्नि संस्कार किया गया है। इन शवों की हालत इतनी खराब हो चुकी है कि

कंकाल में बदल गए थे। निधन के बाद परिवार के लोग शव लेने नहीं आए और विभाग रखकर भूल गया था। वहीं, जिन तीन शवों का अंतिम संस्कार किया गया है, वह शव रायपुर के मेकाहारा हॉस्पिटल (बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर अस्पताल) में लावारिस हालत में पड़े थे। इस अंतिम संस्कार के पीछे भी मीडिया ही वजह बताई जा रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि मीडिया में खबर आने के बाद ही प्रशासन ने अंतिम संस्कार की प्रक्रिया को अंजाम दिया है।

इन्होंने बैलट पेपर लूटकर राज किया, ये ईवीएम हटाना चाहते हैं

- बिहार को अररिया में पीएम मोदी का इंडिया गठबंधन पर बड़ा हमला
- **पीएम मोदी बोले-सुप्रीम कोर्ट के झटके से इनके सपने चूर-चूर हो गए**

अररिया/ मुंगेर (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी अररिया के फारबिसगंज में सभा की। अपने 43 मिनट के संबोधन में पीएम ने 17 मिनट तक कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि आरजेडी, कांग्रेस के इंडिया गठबंधन को न देश के संविधान की परवाह है और न ही लोकतंत्र की परवाह है। ये वह लोग हैं जिन्होंने दशकों तक बैलट पेपर के बहाने गरीबों का अधिकार छीना। पोलिंग बूथ, बैलेट पेपर लूट लिए जाते थे। जब गरीबों को ईवीएम की ताकत मिली है तो चुनाव के दिन लूट करने वालों को बर्दाश्त नहीं हो रहा था। इसलिए वे ईवीएम को हटाना चाहते हैं, लेकिन आज सुप्रीम कोर्ट ने मतपेटियों को लूटने के इरादा रखने वालों को ऐसा गहरा झटका दिया

है कि उनके सारे सपने चूर-चूर हो गए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, इन्होंने (कांग्रेस) यहां तक झूठ फैलाया कि कभी डॉ. मनमोहन सिंह ने ऐसा कहा ही नहीं था कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है। लेकिन आज उनका एक और पुराना वीडियो सामने आया है।

जम्मू-कश्मीर के सोपोर में दो आतंकी ढेर, दो जवान घायल

- दो दिन से चल रहा ऑपरेशन, नौपोरा इलाके के घर में आतंकियों के छिपे होने की सूचना थी

श्रीनगर (एजेंसी)। उत्तरी कश्मीर के सोपोर में सुरक्षाबलों ने शुक्रवार 26 अप्रैल को दो आतंकी मार गिराए। यहां सुरक्षाबलों ने गुरुवार को ऑपरेशन शुरू किया था। आतंकियों से मुठभेड़ में दो जवान घायल हुए हैं। इस दौरान एक नागरिक के कंधे में गोली लगी। उसे जिला अस्पताल भेजा गया, जहां से उसे श्रीनगर रेफर कर दिया गया। मुठभेड़ अभी भी जारी है। नौपोरा इलाके में एक घर के अंदर आतंकियों के छिपे होने की सूचना थी। सुरक्षाबलों ने वहां घेराबंदी दी। आतंकियों

ने सुरक्षाबलों पर गोलियां चलाई और वहां मुठभेड़ शुरू हो गई। गुरुवार 25 अप्रैल को रात अंधेरा होने पर ऑपरेशन रोक दिया गया था। आज सुबह फिर से गोलीबारी शुरू हुई, जिसमें दो आतंकी मारे गए। मारे गए आतंकियों की पहचान नहीं हुई है। वहां लश्कर के डिवीजनल कमांडर उस्मान और लश्कर के संगठन के कमांडर बासित डार के फंसे होने की जानकारी थी। इससे पूर्व मंगलवार को बांदीपोरा के रेंजी अरागाम में आतंकियों से मुठभेड़ में भी दो सैन्यकर्मी घायल हुए थे।

संकट मोचन संगीत समारोह 1

देश के प्राचीनतम संगीत समारोह का 101वां आयोजन

देश के सर्वाधिक प्राचीन संगीत समारोह का 101वां आयोजन शुभारम्भ 27 अप्रैल को शाम साढ़े 7 बजे वाराणसी के संकट मोचन मंदिर के उसी परिसर में किया जा रहा है, जहां 1923 में इसका पहला आयोजन हुआ था। यह समारोह 3 मई तक चलेगा।

राजेन्द्र शर्मा

(लेखक कलाविज्ञ और उप्र सरकार में अधिकारी हैं)

देश में संगीत का ऐसा कोई समारोह नहीं है जो इतना प्राचीन, दिव्य और भव्य हो । इस समारोह के बाद मध्य प्रदेश के तानसेन समारोह का नाम आता है जो 96 वर्ष से आयोजित हो रहा है। वृंदावन का स्वामी हरिदास संगीत समारोह 72 वर्ष से तथा पुणे का सवाई गंधर्व संगीत समारोह 71 वर्ष से आयोजित किया जा रहा है। गौरतलब है कि कोरोना काल में भी संकट मोचन मंदिर के महंत और इस आयोजन के कर्ता धर्ता प्रो. बिशम्भर मिश्र ने इस परम्परा को टूटने नहीं दिया गया । उस समय देश भर के कलाकारों से सलाह मशविरा कर दो वर्षो तक यानि 97वां तथा 98वां संकट मोचन संगीत समारोह डिजीटल तकनीक से आयोजित किया गया।

इस समारोह का न कोई मुख्य अतिथि होता है न कोई कार्यक्रम अध्यक्ष। यहां कोई वीआईपी भी नहीं होता, कोई

पंडित वीरभद्र मिश्र महंत विश्वम्भर मिश्र

सुरक्षा का ताम -झाम भी नहीं। इस समारोह का कोई न्यौता नही होता है,बस आयोजन से एक सप्ताह पहले बेहद मामूली कागज पर कार्यक्रम विवरण की सूचना प्रसारित की जाती है। श्रोताओं के बैठने के लिए दरियां बिछा दी जाती हैं, जो पहले आये आगे की पंक्ति में बैठ जायें। समारोह प्रतिदिन साढ़े सात बजे से प्रारम्भ होकर भोर तक चलता है। श्रोताओं से ठसाठस भरे परिसर में जगह-जगह टीवी स्क्रीन भी लगाए जाते हैं। कवि व्योमेश शुक्ल कहते हैं कि इस समारोह में कोई किसी को बुलाता नहीं, हनुमान जी ही असल और एंकात श्रोता है, लेकिन अगर आपको आना है तो आइये, शाम साढ़े सात से भोर तक कभी भी आइये ,कोई आपको रोकेगा नहीं। कोई टिकट चैक नहीं करेगा। अपनी इस विशेषता के दम पर संकट मोचन संगीत समारोह संगीत रसिकों के लिए लोकपर्व बन चुका है।

संगीत के प्रतिवर्ष होने वाले इस महाकुंभ में इस बार लंदन से तबला वादक संजू सहाय के अलावा शास्त्रीय गायक पण्डित साजन मिश्र और उनके पुत्र स्वरांश मिश्र, विदुषी कलापिनी कोमकली,पंडित भुवनेश कोमकली, मालिनी अवस्थी, मधुमिता राय, वीणा वादक पण्डित विश्व मोहन भट्ट, पंडित उमाकांत व अनंत रमाकांत गुंदेजा,बासुंरी वादक राकेश चौरसिया, वायलिन वादक संगीता शंकर, कविता कृष्णमूर्ति, हरीश गंगानी, रविकांत महापात्रा, उल्लास

कलाशकर सहित भजन सम्राट अनूप जलोटा अपनी प्रस्तुति से सुरों की रसवर्षा करेंगें। देश की एकमात्र महिला सारंगी वादक गौरव बनर्जी सती और लगभग छह दशकों से अधिक समय से देश के नामचीन गायकों के साथ हारमोनियम पर संगत कर चुके पंडित धर्मनाथ मिश्र और पंडित किशन महाराज के नाती युवा तबला वाद संजू महाराज समारोह के प्रत्येक दिन संगत कर अपना जादू बिखरेगें।

समारोह के अन्तिम दिन शास्त्रीय गायिका विदुषी कंकना बनर्जी सुरों की वर्षा करेंगी । यह अपने आप में बडी बात है कि विदुषी कंकना बनर्जी 47 वर्ष पहले वर्ष 1977 में इस समारोह में शामिल हुई थी। उस समय तक संकट मोचन संगीत समारोह में महिला कलाकारों को नही बुलाया जाता था परन्तु तत्कालीन महंत वीरभद्र मिश्र जिनके सदप्रयासों से संकट मोचन संगीत समारोह में दुनिया भर में प्रतिष्ठित हुआ के आव्हान पर महिला कलाकारों के लिए दरवाजे खोल दिये गये और पहली महिला कलाकार के रुप में कंकना बनर्जी को यह गौरव प्राप्त हुआ।

वर्तमान में समारोह की ज़िम्मेदारी सम्हाल रहे मंहत विश्वंभर नाथ मिश्र ने राष्ट्र की परिधि से भी बाहर निकालते हुए इस समारोह को शास्त्रीय, जैज़, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के लिए भी खोल दिया। इस कडी की शुरुआत पाकिस्तान के गजल गायक गुलाम अली ने की थी। अपने इस कदम के बारे में मंहत विशम्भर नाथ मिश्र गोस्वामी तुलसीदास को उद्घरित करते हुए कहते हैं कि गोस्वामी जी ने कहा है कि 'मांग के खइबो मसीद में सोइबो, लेइबो को एक न देइबो को दो' (मांग के खा लेंगे और मस्जिद में सो लेंगे, न किसी से कुछ लेना है और न किसी को कुछ देना ही)। महंत मिश्र आगे कहते है कि मुग़ल काल में रहने वाला हिंदी का इतना बड़ा कवि यह कह गया है, तो हमारी क्या मजाल कि हम उस समरूपता के साथ खिलवाड़ करें या किसी और को भी करने दें।

बहरहाल देश विदेश से शास्त्रीय संगीत के रसिक वाराणसी पहुंच रहे हैं। जिन युवा कलाकारों को इस वर्ष समारोह में हाजिरी लगाने का अवसर मिला है, वह संकट मोचन का धन्यवाद अदा कर रहे है और जिन्हें इस वर्ष हाजिरी लगाने का मौका नही मिल सका है, वह अगले वर्ष मौका मिलने की गुहार संकट मोचन के चरणों में लगा रहे है। महंत विशम्भर नाथ मिश्र आयोजन की सारी जिम्मेदारी संभालते हुए इस दिशा में प्रयासरत है कि उनके बाबा और संकट मोचन के तत्कालीन महंत अमरनाथ मिश्र ने वर्ष 1923 में जिसे बिरवे को रोपा था, उसे अगले आयोजन और कैसे बेहतर और बृहद बनाया जायें।

दो महीने पहले 100 बेड तक जिला अस्पताल शुरू करने का किया था दावा, अभी भी अधूरा

बेहद धीमी गति से चल रहा जिला अस्पताल का निर्माण कार्य

इंदौर। स्वास्थ्य मूलभूत सुविधाओं में आता है जो गरीब से लेकर अमीर तक को मिलना ही चाहिए। अमीर तो फिर भी निजी अस्पतालों में जाकर इलाज करवा सकते हैं लेकिन गरीबों के सरकारी अस्पताल ही एकमात्र सहारा होते हैं, सरकार की अनदेखी उन गरीबों पर दोतरफा मार करती है, एक तो वे पैसे के अभाव में निजी में इलाज नहीं करवा पाते और दूसरा वे अपनी जान तक गंवा देते हैं। शहर के सांसद, विधायकों का भी इस ओर ध्यान नहीं है, उन्हें अपनी प्राथमिकता में इसे लेकर इसका निर्माण पूरा करवाना चाहिए।

वादे हैं वादों का क्या... यह कहावत इस समय जिला अस्पताल की नई बन रही बिल्डिंग पर सटीक बैठती हुई नजर आ रही है। यहां बार-बार भोपाल के अधिकारी आकर शहरवासियों से इसके शुरू होने का वादा करके चले जाते हैं, लेकिन इसपर अमल आज तक नहीं हो पाया है। कछुए की तरह रेंगते हुए चल रहे अस्पताल का निर्माण कार्य कब पूरा होगा यह किसी को पता नहीं है।दो माह पहले एसीएम मो. सुलेमान और आयुक्त सुदाम खाड़े यहां निरीक्षण के लिए पहुंचे थे।

निरीक्षण के दौरान अस्पताल निर्माण की गतिविधियों को देखा था। इस दौरान उन्होंने कहा था कि अप्रैल तक 100 बेड का अस्पताल शुरू हो जाएगा, तल और प्रथम मंजिल बन जाएगी। लेकिन वास्तविक हालात यह है कि अभी इसका निर्माण कार्य ही पूरा नहीं हो पाया है।ऐसे में अभी इसे शुरू होने में और कितना समय लगेगा, यह कह पाना मुश्किल है। यह पहली बार नहीं है जब जनप्रतिनिधि और अधिकारी जिला अस्पताल का निर्माण कार्य पूरा होने की बातें कर चुके हैं। छह वर्षों में कई बार इस तरह के वादे कर यह वाहवाही तो लूट चुके हैं, लेकिन अमल नहीं कर पाएं हैं। कभी कोरोना, तो कभी ठेकेदार की लापरवाही का हवाला देते हुए निर्माण कार्य पूरा नहीं होने की बात कहते हैं। अस्पताल का निर्माण कार्य पूरा नहीं होने के कारण मरीजों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।बता दें कि निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने कहा था कि अस्पताल निर्माण में ड्राइंग और डिजाइन के कारण देरी हो रही है। एक वर्ष में दो मंजिल और बन जाएगी। इस दौरान सीटी स्कैन और एमआरआइ मशीन लगाने की जगह भी इन्होंने देखी थी। सिविल सर्जन डॉ. गिरधारी लाल सोढ़ी ने बताया कि हाउसिंग बोर्ड इसका निर्माण कर रहा है। लेकिन अभी तक इसका निर्माण कार्य पूरा नहीं हो पाया है।

300 बेड का बन रहा अस्पताल

जिला अस्पताल 300 बेड का बनाया जा रहा है। जिससे शहर के साथ ही संभागभर से आने वाले मरीजों को इलाज की सुविधाएं मिल सकेगी। वर्तमान में अस्पताल के नाम पर सिर्फ यहां स्त्री एवं प्रसूति विभाग को शुरू किया गया है। अन्य बीमारियों से पीड़ित मरीजों को यहां भर्ती करने की व्यवस्था भी नहीं है। जिला अस्पताल की नई इमारत तैयार होने के बाद यहां एमआरआई, सीटी स्कैन जैसी मशीनें भी स्थापित की जाना है जो पहले से स्वीकृत हैं। जिसका सबसे ज्यादा फायदा पश्चिम इंदौर की 15 लाख जनसंख्या को मिलेगा।

निजी अस्पताल जाने पर मजबूर मरीज

जिला अस्पताल के काम की गति धीमी होने का सबसे ज्यादा खामियाजा पश्चिम क्षेत्र की जनता ही हो रहा है। उन्हें छोटे मोटे उपचार के लिए भी निजी अस्पताल जाना पड़ रहा है। जिला अस्पताल पर नूरानी नगर, चंदन नगर, सिरपुर, बांक, द्वारकापुरी सहित दर्जनों कालोनियों और बस्तियों के रहवासी आश्रित हैं। आसपास के दो दर्जन से अधिक गांव के लोग भी यहां इलाज के लिए आते हैं। जिला अस्पताल की सुविधा नहीं होने से मरीजों को परेशान होना पड़ रहा है।

एक दिन में 500 चैंबर बनाए, पांच किमी तक लाइन खोदी!

नगर निगम में घोटाला, इस बार जांच कमेटी ने 70 करोड़ रुपये की 50 फाइलें पकड़ीं

इंदौर। नगर निगम का ड्रेनेज विभाग घोटाले के मामले में उफान पर है। इस बार 70 करोड़ का घोटाला उगला है। निगम की जांच कमेटी ने गुरुवार को 50 फाइलें जब्त की हैं। जालसाजों ने एक दिन में 500 से ज्यादा चैंबर बनाना और पांच किमी तक लाइन खोदना दर्शा कर भुगतान भी ले लिया।एमजी रोड थाने में 28 करोड़ रुपये की गड़बड़ी की एफआइआर दर्ज होने के बाद निगमायुक्त शिवम वर्मा विभागीय जांच करवा रहे हैं।

निगम की चार सदस्यीय जांच कमेटी ड्रेनेज विभाग की फाइलें खंगाल रही थी कि ऐसा बंडल हाथ लगा, जिसमें 70 करोड़ रुपये का फर्जीवाड़ा हुआ है। सूत्रों के मुताबिक जब्त फाइलें ब्लैक लिस्टेड ठेकेदार मोहम्मद सिद्दीक, मोहम्मद साजिद, मोहम्मद जाकिर, रेणु वढ़ेरा और राहुल वढ़ेरा की हैं। कुछ अन्य ठेकेदारों के नाम भी हैं, लेकिन अफसर खुलकर नहीं बता रहे। इन फाइलों में जनकार्य, उद्यान कार्य, लाइन खोदाई और ड्रेनेज संबंधित कार्य दर्शाए गए हैं। ठेकेदारों ने एक दिन में 500 से ज्यादा चैंबर बनाना और पांच किमी तक की लाइन खोदना बताया, जो व्यवहारिक रूप से संभव ही नहीं है। कमेटी अब रिपोर्ट बना रही है। जिन लोगों ने गड़बड़ी की उन पर भी कार्रवाई की तैयारी है।

ठेकेदार खुद ही फाइल ले गए और आडिट विभाग ने स्वीकृत कर दी

निगम अफसर ठेकेदारों के इशारे पर काम कर रहे थे। ठेकेदारों ने जाली बिल, स्वीकृति, निविदा बनाकर फाइलें तैयार की और अफसर-बाबुओं से साइन करवाते गए। फाइलें आवक-जावक शाखा से गुजरी ही नहीं। खास बात यह कि आडिट विभाग ने भी ठेकेदारों की शक्ल देखकर भुगतान की स्वीकृति दे दी। जिन फाइलों में गड़बड़ी हुई वो संबंधित शाखाओं में गई ही नहीं। कमेटी को नौ अन्य फाइलों की तलाश है जिनमें घोटाला हुआ है। पुलिस एक्जीक्यूटिव इंजीनियर (ईई) सुनील गुप्ता के बयानों की भी जांच कर रही है। गुप्ता द्वारा ही मार्च में 20 फाइलों की चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है। गुप्ता का दावा है कि निगम परिसर में खड़ी कार से फाइलें चोरी हुई है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज निकाले तो कर्मचारी परिसर में खड़े नजर आए लेकिन कार से फाइल निकालने के फुटेज नहीं मिले। जिन फाइलों में चोरी हुई, उनमें गुप्ता के भी हस्ताक्षर हैं। टीआइ विजयसिंह सिसोदिया के मुताबिक जांच के लिए नमूने लिए गए हैं।

मुफ्त की सिगरेट के लिए एसआई ने दुकानदार को निर्वस्त्र कर पीटा, डीसीपी ने किया निलंबित

शिकायतकर्ता जय जोशी की पलासिया चौराहा पर दुकान है

इंदौर। तुकोगंज थाना के एसआई ने दुकानदार की बेरहमी से पिटाई कर दी। एसआई मुफ्त में सिगरेट चाहता था। डीसीपी ने एसआई को निलंबित कर लाइन अटैच कर दिया है।विभागीय जांच के आदेश दिए है। शिकायतकर्ता जय जोशी की पलासिया चौराहा पर दुकान है। भाई मयूर भी दुकान पर बैठता है। आरोप है कि करीब 15 दिन पूर्व एसआई शैलेंद्र अग्रवाल सिगरेट लेने आया था।सिगरेट के रुपये लेने पर गुस्सा हो गया। बुधवार देर रात एसआई शासकीय गाड़ी से आया और जय व कर्मचारियों को थाने ले गया। थाने में वस्त्र उतरवाए और जमकर पिटाई की। कर्मचारियों को रात में छोड़ दिया जबकि जय को सुबह छोड़ा गया। घायल जय को एमवाय अस्पताल ले गए लेकिन उपचार से मना कर दिया। स्वजन ने निजी अस्पताल में भर्ती करवाया और अफसरों को शिकायत की। शाम को जोन-3 के डीसीपी पंकज पांडे ने एसआई को निलंबित कर लाइन अटैच कर दिया।

रिजल्ट लेकर आ रहा था छात्र, अचानक आई कार ने रौंदा दिया

इंदौर। 17 वर्षीय सुजल पटेल की बुधवार को सड़क हादसे में मृत्यु हो गई। वह 12वीं का रिजल्ट देखने स्कूल जा रहा था। सुजल की मौत से बेखबर स्कूल वालों ने बताया उसको 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक मिले है। हादसे से स्वजन की हालत खराब है। गुरुवार को शव का पीएम करवाया गया है। घटना शाम करीब सात बजे गोम्मटगिरी स्थित गौशाला के सामने की है। किसान दिनेश पटेल का बेटा सुजल नगीन नगर (चंदननगर) स्थित निजी स्कूल में 12वीं में पढ़ता था। बुधवार को ही उसका रिजल्ट आया था। शाम को वह दोस्त के साथ बाइक से स्कूल जा रहा था। तभी पीछे से तेज रफ्तार से कार आई और सुजल की बाइक को टक्कर मारते हुए निकल गई। कार का पहिया सुजल के सिर के ऊपर से निकल गया।संयोग से उसके पीछे-पीछे दिनेश पटेल भी चल रहे थे। भीड़ देखकर रुके तो देखा सुजल ही बेहोश पड़ा है। तत्काल निजी अस्पताल ले गए लेकिन उसकी मौत हो गई। सुबह स्वजन स्कूल पहुंचे तो बताया सुजल को 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक मिले है। वह पढ़ने में होशियार था। गुरुवार सुबह गांधीनगर पुलिस ने उसके शव का पोस्टमार्ट्म करवाया है।

पिता मजदूरी कर कमाते हैं रोज 400 रुपये, बेटे ने प्रावीण्य सूची में आकर कमाया नाम

इंदौर। जयंत ने कहा कि उसका सपना है कि वह आईएएस बने। अभी विज्ञान संकाय से वह 12वीं करेगा। उसके बाद प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के साथ ग्रेज्युएशन करेगा। जयंत ने कहा कि आईएएस बनकर वह अपने माता-पिता को सच्ची खुशी देना चाहता है। इंदौर के श्रमिक क्षेत्र की बस्ती में रहने वाले एक छात्र ने दसवीं की जिला स्तरीय प्रावीण्य सूची में दूसरा स्थान पाया,लेकिन परिवार को दो दिन तक पता ही नहीं चला। जब क्षेत्र के विधायक रमेश मेंदोला ने सोशल मीडिया पर उसकी पोस्ट डाली तो बस्ती वालों ने मोर्य परिवार को खबर की। गौरी नगर बस्ती में रहने वाले जयंत मोर्य स्वामी विवेकानंद हायर सेंकडरी स्कूल में पढ़ते है। पिता राजेश बस्ती के चौक पर रोज मजदूरी के लिए खड़े रहते है। महीने भर में दस से बारह हजार रुपये कमा पाते है।

दिहाड़ी के उन्हें रोज 400 से 600 रुपये मिलते है। मजदूरी नहीं मिलने पर कई बार खाली हाथ रहना पड़ता है, लेकिन उन्होंने बेटे की पढ़ाई में कोई कसर बाकी नहीं रखी।मां चेतना भी घर खर्च चलाने के लिए ब्लाऊज सिलने का काम करती है। जयंत बचपन से ही पढ़ने में अच्छा है, इसलिए पिता ने बस्ती के ही एक निजी स्कूल में दाखिला करवा दिया था। प्राचार्य विशाल गुप्ता कहते है कि अभाव के बीच रहकर भी एक मेघावी छात्र तैयार हो सकता है, यह जयंत ने साबित कर दिया। घर और स्कूल की पढ़ाई के साथ उसने प्रावीण्य सूची में दूसरा स्थान बनाया।

गेहूं में सरकारी खरीदी की रफ्तार बीते साल से कम, बाजार मजबूत

मिलों की मांग बढ़ने से चने और मसूर में तेजी, मूंग में गिरावट

इंदौर। एमएसपी पर गेहूं की सरकारी खरीदी के आंकड़े सरकार के लिए संतोषप्रद नहीं है। दरअसल, 23 अप्रैल तक के आंकड़ों के अनुसार पूरे देश में गेहूं की कुल खरीदी 119.26 लाख टन हुई है, जबकि बीते वर्ष इसी अवधि तक खरीदी 159.23 लाख टन हो चुकी थी। हरियाणा से लेकर मप्र और पंजाब तक गेहूं खरीदी में पीछे हैं। मप्र में अब तक 29.71 लाख टन खरीदी हो चुकी है। बीते वर्ष 40.18 लाख टन गेहूं खरीदा गया था। यानी मप्र में इस साल खरीदी कम है जबकि सरकार ने खरीदी जल्द शुरू की है और बीते दिनों से पैमाने में भी छूट दी है। मंडियों में भी गेहूं के दाम मजबूत बने हुए हैं। इससे भी किसान मंडी में माल बेच रहे हैं। अच्छी क्वालिटी के गेहूं की मांग अच्छी है और दाम बढ़ाकर दिए जा रहे हैं। गुरुवार को इंदौर की दोनों मंडियों में गेहूं की आवक करीब 18 हजार बोरी रही। मंडी में गेहूं मिल क्वालिटी 2550-2600, पूर्णा 2850-2900, मालवराज 2550-2600, लोकवन 2850-2900 और मक्का 2250-2250 रुपये क्विंटल बिकी।दूसरी ओर चना दाल और बेसन में उठाव वैवाहिक सीजन की वजह से अच्छा बना हुआ है। मंडी में अच्छी क्वालिटी के चने की आवक कम होने के कारण भाव में तेजी का वातावरण बना हुआ है। गुरुवार को चना कांटा बढ़कर 6200-6300 विशाल 5900-6100 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया, वहीं काबुली चने में पिछले दो-तीन दिनों से सुस्त कारोबार और निर्यातकों की कमजोर डिमांड के कारण दाम रोजाना धीमी गति से नीचे आ रहे हैं।गुरुवार को भी काबुली चने में करीब 100 रुपये की गिरावट दर्ज की गई। व्यापारियों का कहना है कि इस बार काबुली चने का उत्पादन अच्छा हुआ है। ऐसे में इसका भविष्य निर्यात मांग पर काफी कुछ निर्भर करेगा। घटे दामों पर आयातकों की मसूर में बिकवाली कम होने और मिलों की सीमित पूछताछ बाजार में आने के कारण मसूर की कीमतों मे फिर से सुधार रहा।मसूर बढ़कर 6000-6050 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गई, वहीं मूंग की आवक अच्छी होने और दालों में बिक्रा नहीं होने कारण मिलों के पास भी दालों का स्टाक बेहतर है। इस वजह से मूंग में लेवाली बेहद कमजोर है जिससे भाव मे गिरावट रही। गुरुवार को मूंग में करीब 200 रुपये की गिरावट दर्ज की गई।

आबकारी विभाग ने ऑटो रिक्शा से जब्त की चार पेटी देशी शराब

इंदौर। लोकसभा निर्वाचन के दौरान इंदौर जिले में लगातार अवैध शराब की बिक्री और परिवहन पर रोक लगाने के लिए जांच की जा रही है। आबकारी विभाग के सभी वृत की टीमें लगातार कार्रवाई कर रही है। इसी कड़ी में गुरुवार को बाणगंगा चौराहे के पास ऑटो को रोककर तलाशी ली गई, तो चार पेटी विधि से शराब पाई गई। ऑटो और शराब को जब्त करने के साथ ही आरोपित को भी गिरफ्तार किया गया। इंदौर जिले में लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर मदिरा के अवैध क्रय-विक्रय, परिवहन, भंडारण की रोकथाम के लिए कलेक्टर आशीष सिंह के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग के दलों द्वारा लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। सहायक आबकारी आयुक्त मनीष खरे के निर्देशन में आबकारी वृत भोई मोहल्ला प्रभारी उपनिरीक्षक शालिनीसिंह द्वारा बाणगंगा शमशान घाट चौराहा के पास से तीन पहिया वाहन से चार पेटी देशी शराब प्लेन पकड़ी गई।

अवैध परिवहन करते आरोपी दीपक पिता मानसिंह राजपूत निवासी भागीरथपुरा इंदौर को पकडा गया। वाहन और मदिरा जब्त कर कब्जे आबकारी लेकर आरोपी को विधिवत गिरफ्तार करते हुए प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। जब्त वाहन व मदिरा का अनुमानित बाजार मूल्य लगभग एक लाख 35 हजार रुपये है।

17 वर्ष पुराने मामले में कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय बम पर न्यायालय ने बढ़ाई हत्या के प्रयास की धारा

इंदौर। कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय बम प्राणघातक हमले के मामले में फंस गए हैं। जिला न्यायालय ने 17 वर्ष पुराने एक मामले में बम पर हत्या के प्रयास की धारा बढ़ा दी है। अब तक प्रकरण में सिर्फ धारा 323, 506, 147, 148, 149 ही लगी थीं। कोर्ट ने अक्षय और उनके पिता को कांति बम को 10 मई को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने के लिए भी कहा है। फरियादी युनूस पटेल के वकील मुकेश देवल ने बताया कि मामला कनाडिया क्षेत्र की जमीन का है। यह जमीन फरियादी की थी। अक्षय बम, कांति बम और उनके परिवार के अन्य सदस्यों ने वर्ष 2007 में इस जमीन का सौदा 50 लाख रुपये में करते हुए एक अनुबंध किया था। बाद में आरोपितों ने चेक देकर इस जमीन की रजिस्ट्री भी करवा ली, लेकिन चेक बाउंस हो गया।इधर, आरोपितों ने बगैर फरियादी को बताए ही जमीन का नामांतरण भी करवा लिया। 4 अक्टूबर 2007 को फरियादी अपने खेत पर था कि आरोपित कांतिलाल बम, अक्षय बम, अन्य सात-आठ लोगों के साथ पहुंचे। उनके हाथ में बंदूक भी थी। बम ने कहा कि ये यूनुस गुड्डू है। इसे गोली मार दो।

इंदौर में बढ़ रहा मच्छरों का प्रकोप, जनता परेशान लेकिन जिम्मेदार नहीं दे रहे ध्यान

इंदौर। इन दिनों शहर में मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण है फागिंग न होना। नगर निगम के 19 जोन हैं। प्रत्येक जोन में दो-दो फागिंग मशीन हैं। इसके अलावा दो बड़ी फागिंग मशीन भी हैं। बता दें कि मलेरिया विभाग के पास 35 तो नगर निगम के पास सिर्फ 25 कर्मचारी हैं, जिन्हें मच्छरों का प्रकोप कम करने की जिम्मेदारी मिली है। अधिकारियों के मुताबिक, मच्छरों के बढ़ने का कारण तापमान में उतार-चढ़ाव है, क्योंकि गर्मी अधिक नहीं होने के कारण मच्छर तेजी से पनप रहे हैं। शहर तापमान, वर्षा और आर्द्रता में वृद्धि के साथ मौसम परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जिससे मच्छरों का घनत्व बढ़ रहा है। हाल ही में कांग्रेस ने भी इस मुद्दे को उठाया था। इसमें उन्होंने आरोप लगाया था कि मच्छरों के प्रकोप को कम करने के लिए दवाइयों का छिड़काव भी नहीं हो रहा और 19 जोनों में दी गई अधिकांश मशीनें भी खराब पड़ी हैं।

क्यूलेक्स मच्छरों का प्रकोप

इस मौसम में क्यूलेक्स मच्छरों का प्रकोप रहता है। ये मच्छर डेंगू या मलेरिया नहीं फैलाते हैं, बल्कि नालों में रुके हुए पानी में में पनपते हैं। जल निकासी लाइनों में दुर्गम पानी भी इनके पनपते का कारण है। वहीं एडीज और एनोफेलीज डेंगू और मलेरिया फैलाते हैं, लेकिन अभी इनका प्रकोप अधिक नहीं है। गर्मी में इस प्रकार के मच्छरों का घनत्व बढ़ जाता है, क्योंकि लोग बिना ढंके कंटेनरों में पानी जमा करते हैं। नगर निगम द्वारा 19 फागिंग मशीनों के माध्यम से शहर के सार्वजनिक स्थानों पर मच्छरों को भगाने का कार्य किया जा रहा है।

बाहर निकलना हो गया मुश्किल- शहरवासियों का कहना है कि हम न केवल अपने घर के पास, बल्कि कार्यालय या शहर में कहीं भी जा रहे हैं तो मच्छर मंडराते रहते हैं। अपने घरों की खिड़कियां और दरवाजे भी खुल रखना बंद कर दिए हैं, लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर या सार्वजनिक परिवहन में हम क्या कर सकते हैं।

सनातनी समाज में शिक्षक का महत्व

समागम का संदेश शिक्षक कितनी दूर तक पहुंचाएंगे, यह विचार कांग्रेस की चिंता बढ़ा सकता है

इंदौर। एक शिक्षक पूरे समाज को गढ़ता है। इसलिए सनातनी संस्कारों में गोविंद से भी पहले गुरू को स्थान दिया गया है। सनातन संस्कारों में देश को रंगने में जुटी भगवा पार्टी ने बड़ी सूझबूझ से शिक्षाविद स्वप्निल कोठारी को अपने साथ जोड़ा और अब कोठारी तमाम शिक्षकों को भगवादल से जोड़ रहे हैं। एक शिक्षक की अहमियत शायद कांग्रेस ठीक से समझ नहीं सकी, वरना 'हाथ' से जाने न देती। खैर, गत दिनों कोठारी की अगुआई में हुए समागम में शहरभर के शिक्षक एक जाजम पर इकट्ठा हुए। यहां सांसद शंकर लालवानी भी थे जिन्होंने गुरुओं से संवाद किया, कुछ उनकी सुनी और कुछ अपनी सुनाई। समाज में शिक्षक ही है जो अहिंसक धनोपार्जन करता है और इसलिए उनकी वाणी में प्रभाव होता है। इस समागम का संदेश शिक्षक कितनी दूर तक पहुंचाएंगे, यह विचार कांग्रेस की चिंता बढ़ा सकता है।

बाणगंगा का भगवाकरण

संजय शुक्ला ने जब से कांग्रेस का दामन छोड़ा है, राजनीतिक सक्रियता ज्यादा बढ़ गई है। उनका जाना कांग्रेस के लिए झटका था, लेकिन वे इसके बाद लगातार पार्टी को झटके देने में जुटे हैं। एक नंबर विधानसभा में बड़ी संख्या में कांग्रेसी नेताओं को भाजपा की सदस्यता दिलाते हुए क्षेत्र में अपना शक्ति प्रदर्शन भी कर दिया। बाणगंगा क्षेत्र में शुक्ला परिवार का प्रभाव पहले से था और शहर में भाजपा को खड़ा करने में भी स्व. विष्णुप्रसाद शुक्ला ने पसीना और पूंजी दोनों खर्च की। प्रदेश के मुख्यमंत्री की आयोजन में आमद ने शुक्ला का नई पार्टी में कद और बढ़ा दिया है। राजनीति के गलियारों में चर्चा है कि क्षेत्र के विधायक कैलाश विजयवर्गीय भी अपना प्रभाव दिखाने को तैयार हैं। आने वाले दिनों में कुछ और कांग्रेसी चेहरे भगवा दुपट्टा ओढ़ने वाले हैं, जिनमें एक पार्षद का नाम प्रमुख है। बाणगंगा का भगवाकरण होना तय है।

कुर्सी से हटाने और बैठाने का खेल

वक्त जब ठीक न हो तो परिवार ही सहारा होता है। सत्ता सुख से दूर कांग्रेस के लिए वक्त मुफीद नहीं है और परिवार तोड़ने पर भाजपा आमादा है। अब लगता है उच्च पदों पर बैठे चेहरे भी जो साथ हैं उनका 'हाथ' थामे रखने को गंभीर नहीं हैं। चलते चुनाव के बीच ब्राह्मण चेहरे नीलाभ शुक्ला को प्रदेश प्रवक्ता से हटाते हुए संभागीय प्रवक्ता बना दिया। अपने बयानों से अब तक भाजपा पर प्रहार करने वाले नीलाम के निशाने पर अपनी ही पार्टी आ गई। उनका इस्तीफा भाजपा नेताओं ने खूब बहुप्रसारित किया। आनन-फानन में निर्देश निकालते हुए नीलाम को पुराना पद लौटाया गया। अब राजनीति के गलियारों में चर्चा है कि शहर महिला कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाई गईं साक्षी शुक्ला को भी प्रदेश में अहम पद देने की योजना है। पद कब मिलता है इस पर सभी की निगाह है, वरना भाजपा के 'शुक्ला' अपने साथ जोड़ने को तैयार बैठे हैं।

'मच्छर' भी नहीं मार पा रहे कांग्रेसी नेता

चुनाव सिर पर हैं और दोनों ही दलों में अजब सी सुस्ती है। नगर निगम, फिर विधानसभा चुनावों के पैटर्न पर भाजपा को लोकसभा का गढ़ भी जीता नजर आ रहा है, लेकिन कांग्रेस टक्कर देती भी नजर नहीं आ रहा। दूसरे नेता तो दूर खुद पार्टी प्रत्याशी ने अब तक ऐसा कोई काम नहीं किया है, जिससे भाजपा के चेहरे पर शिकन आए। शहर में मच्छरों की समस्या से सब परेशान हैं। पुराने नेता राजेश चौकसे ने यह मुद्दा उठाते हुए नगर निगम को घेरने का प्रयास किया।

संपादकीय

पित्रोदा के बयान से पलीता

जब सैम पित्रोदा जैसे शुभ चिंतक हों तो कांग्रेस को दुश्मनों की जरूरत नहीं है। यह कहावत इसलिए सही है कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के ठीक ठाक चलते चुनाव कैम्पेन को सैम पित्रोदा के एक बयान ने ऐसा पलीता लगाया है कि पूरी पार्टी रक्षात्मक मुद्रा में आ गई है। भारत में जारी आम चुनाव के दौरान ही ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने समाचार एजेंसी एएनआई से बातचीत में अमेरिका के इनहेरिटेंस (विरासत) टैक्स की वकालत की, जिसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत समूची भाजपा ने कांग्रेस को आड़े हाथों ले लिया है। इससे परेशान कांग्रेस ने पित्रोदा के बयान से किनारा कर लिया है और खुद सैम पित्रोदा ने भी अपने बयान पर सफाई दी है। गौरतलब है कि पित्रोदा शिकागो से समाचार एजेंसी एएनआई से बातचीत में कहा कि अमेरिका में इनहेरिटेंस टैक्स की व्यवस्था है। इसका मतलब है कि अगर किसी के पास 10 करोड़ डॉलर की संपत्ति है तो उसके मरने के बाद बच्चों को केवल 45 फ़ीसदी संपत्ति ही मिलेगी और बाकी 55 फ़ीसदी सरकार ले लेगी। ये काफ़ी दिलचस्प क़ानून है। ये कहता है कि आप अपने दौर में संपत्ति जुटाओ और अब जब आप जा रहे हैं, तो आपको अपनी धन-संपत्ति जनता के लिए छोड़नी होगी, सारी नहीं लेकिन उसकी आधी, जो मेरी नज़र में अच्छा है। लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं रही। पित्रोदा ने आगे कहा कि भारत में आप ऐसा नहीं कर सकते। अगर किसी की संपत्ति 10 अरब रुपये है और वह इस दुनिया में न रहे तो उनके बच्चे ही 10 अरब रुपये रखते हैं और जनता को कुछ नहीं मिलता। तो ये कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिस पर लोगों को बहस और चर्चा करनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि इसका नतीजा क्या निकलेगा लेकिन जब हम संपत्ति के पुनर्वितरण की बात करते हैं, तो हम नई नीतियों और नए तरह के प्रोग्राम की बात करते हैं जो जनता के हित में है.. न कि केवल अमीर लोगों के। पित्रोदा का यही कहना भाजपा के भाग से छींका टूटने जैसा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि जब तक आप जीवित रहेंगे, तब तक कांग्रेस आपको ज्यादा टैक्स से मारेगी और जब जीवित नहीं रहेंगे, तब आप पर इनहेरिटेंस टैक्स का बोझ लाद देगी। उन्होंने कहा, 'पूरी कांग्रेस पार्टी को अपनी पैतृक संपत्ति मानकर जिन लोगों ने अपने बच्चों को दे दी, अब वो नहीं चाहते कि भारतीय अपनी संपत्ति अपने बच्चों को दें। कांग्रेस का मंत्र है- कांग्रेस की लूट... जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी।' प्रधानमंत्री ने राजस्थान के बांसवाड़ा में चुनावी रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि कांग्रेस महिलाओं के गहने और मंगलसूत्र लेकर पैसा ऐसे लोगों में बांट देगी जिनके अधिक बच्चे हैं, जो घुसपैठिए हैं। कांग्रेस पर इसी हमले को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने यह कहकर आगे बढ़ाया कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक बार कहा था कि हम देश के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का मानते हैं, और अब इनके घोषणापत्र बनाने में जिनकी अहम भूमिका है उनका (सैम पित्रोदा) बयान कि संपत्ति के बंटवारे पर विचार होना चाहिए। इस हमले के बाद कांग्रेस बैक फुट पर है। पार्टी के नेता जयराम रमेश ने कहा कि पित्रोदा के विचार उनके निजी हैं। भाजपा झूठ फैला रही है। सैम पित्रोदा ने क्या कहा, उससे भी बड़ा सवाल यह है कि उन्होंने अभी ऐसा क्यों कहा? वो चुप रहते तो शायद कांग्रेस की ज्यादा मदद होती। अब अगर चुनावी बाजी कांग्रेस के हाथ से फिसल जाए तो किसे दोष देंगे?

मणिपुर- हमारी दिलचस्पी केवल फौरी राजनीति में

नजरिया

प्रमोद रंजन

समाज शास्त्र में रूचि रखने वाले लेखक लंबे समय से पूर्वोत्तर भारत में रह रहे हैं।

पिछले दस महीनों से मणिपुर में भयावह हिंसा जारी है। मैतेई और कुकी समुदाय आमने-सामने हैं। यह 3 मई, 2023 को शुरू हुई थी। फरवरी, 2024 तक 219 लोग मारे जा चुके हैं। मारे जाने वालों में 166 कुकी हैं। इसके अलावा बहुत सारे लोग 'गायब' हैं। जगह-जगह गोलियां चल ही रही हैं, घर अभी भी जलाए जा रहे हैं। लगातार हत्याएं हो रही हैं। सेना के अधिकारी से लेकर पुलिस अधीक्षक तक अपहृत हो रहे हैं। मणिपुर में किया गया इंटरनेट शटडाउन 2023 में दुनिया का सबसे लंबा साइबर ब्लैकआउट रहा। इंटरनेट सेवा अभी तक पूरी तरह बहाल नहीं हो सकी है।

इन दिनों जिस कस्बे में मैं रहता हूं, वहां से मणिपुर की सीमा सिर्फ कुछ घंटे की दूरी पर है। यह कार्बी और दिमाशा नामक जनजातियों का इलाका है। यहां थोड़ी कुकी आबादी भी है। हाल ही में मणिपुर से भाग कर कुछ कुकी परिवार उनके पास आए हैं। केंद्र और मणिपुर राज्य की भाजपा सरकार किस प्रकार एक पक्ष 'मैतेई समुदाय' के समर्थन में है, इसके बारे में सबको पता है।

यह हिंसा क्यों हो रही है, इसके बारे में आपको बताया जाता है कि, यह दो ट्राइब्स मैतेई और कुकी का झगड़ा है। इसके पीछे मैतेई समुदाय की यह मांग है कि उन्हें भी कुकी समुदाय की भांति अनुसूचित जनजाति की लिस्ट में शामिल किया जाए। जिससे उन्हें मणिपुर के पहाड़ी इलाकों में जमीन खरीदने का अधिकार और सरकारी नौकरियों में आरक्षण मिल सके। इसी तरह कहा जाता है कि इसके पीछे कुकी समुदाय द्वारा की जाने वाली अफीम की अवैध खेती और कुकी लोगों के इलाके में मिला प्लैटिनम सहित विभिन्न खनिजों का बड़ा भंडार है, जिन पर मैतेई माफिया कब्जा चाहते हैं। वहां शुरू की गई पाम तेल की खेती है, जिसके लिए पतंजलि समेत अन्य कॉर्पोरेशनों को जमीन चाहिए। पहाड़ी इलाकों में जमीन न खरीद पाने का मैतेइयों का दर्द है। ये सभी कारण सही हैं, इनके बारे में मैंने अन्यत्र विस्तार से लिखा है। लेकिन इनमें से कुछ तात्कालिक कारण हैं और कुछ को हिंसा शुरू होने के बाद सुनियोजित तरीके से उभारा गया है। किसी भी दंगे के पीछे अनेक प्रकार के हित सक्रिय होते ही हैं। कोई दूसरे समुदाय की संपत्ति पर कब्जा चाहता है, तो किसी की नजर दूसरे समुदाय की स्त्रियों पर होती है, तो किसी का स्वार्थ इसमें होता है कि दूसरा समुदाय भाग जाए तो उनके व्यापार पर कब्जा जमाया जा सके। कोई इस बहाने अपना सामाजिक-राजनीतिक वर्चस्व बनाना चाहता है। इसी प्रकार मणिपुर में जारी हिंसा का कोई एक कारण नहीं है।

लेकिन मणिपुर हिंदुत्व के लिए एक ऐतिहासिक प्रयोगशाला भी है, इसे कम लोग जानते हैं। सरकार इसे एथिनिक हिंसा के रूप में प्रचारित करती है, जिसे हिंदी में अखबार 'जातीय हिंसा' लिखते हैं। लेकिन अगर इसे कोई सही नाम देना है तो वह 'सरकार प्रायोजित गृह युद्ध' हो सकता है। एक ऐसा गृह युद्ध जिसे मौजूदा भाजपा सरकार इसलिए प्रश्रय दे रही है, क्योंकि यह उसके पैतृक संगठन के सबसे बड़े सपने से जुड़ा है। वह सपना है, एक राष्ट्र, एक धर्म का।

इसे समझने के लिए मणिपुर की धार्मिक जनसांख्यिकी पर नजर डाल लेना आवश्यक होगा। कुकी समुदाय ने

1910 में इसाई धर्म अपनाया था। उससे पहले कुकी भी पूर्वोत्तर के अन्य आदिवासी समुदायों की ही तरह एनिमिस्ट (जीववादी) थे। आज 98 प्रतिशत से अधिक कुकी ईसाई हैं। कुछ अभी तक एनिमिस्ट हैं। सभी कुकी अनुसूचित जनजाति (एसटी) सूची में शामिल हैं।

दूसरी ओर आज अधिकांश मैतेई हिंदू (83 प्रतिशत) हैं। मैतेइयों में 8.4 प्रतिशत मुसलमान, एक प्रतिशत से कुछ ज्यादा इसाई और बाकी सनमही पद्धति का पालन करने वाले लोग हैं। मैतेइ कोई एक जाति या जनजाति न होकर एक जातीय समूह है, जिनमें सामाजिक-शैक्षणिक स्तर पर भिन्नताएं हैं। उनमें से कुछ समुदाय सामान्य वर्ग में हैं, कुछ आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के रूप में चिन्हित हैं। अनेक मैतेई समुदाय अन्य पिछड़ा वर्ग और अनुसूचित जाति (एससी) सूची में भी हैं लेकिन 18वीं शताब्दी की शुरुआत तक मैतेइ हिंदू नहीं थे। यह सनमही और पखंगबा की अराधना करने वाला आदिवासी समुदाय था। अन्य आदिवासियों की तुलना में उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा अधिक विकसित और समृद्ध थी।

15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 16वीं शताब्दी के शुरू में राजा क्याम्बा के शासनकाल के दौरान ब्राह्मणों ने मणिपुर में आना शुरू किया। करीब तीन सौ साल तक वे छोटी-छोटी टोलियों में आते रहे। उन्होंने मैतेई राजाओं को अपने प्रभाव में लेना शुरू किया। संख्या में वे नगण्य थे, लेकिन 18वीं शताब्दी में वे इतने प्रभावशाली हो गए कि राजा उनकी बात मानने लगे। उनके कहने पर राजा ने मैतेईयों को हिंदू धर्म अपनाने का आदेश दिया।

मैतेई समुदाय ने लंबे समय तक इसका प्रतिरोध किया और वे अपनी आराधना पद्धति मानते रहे। लेकिन अंततः ब्राह्मणों की जीत हुई। वे अपना कर्मकांड और जातिप्रथा दोनों मणिपुर पहुंचाने में सफल रहे। यह सब इतिहास में लिपिबद्ध है और निर्विवाद है। 2500 साल पहले बौद्ध धर्म के नाश के बाद ब्राह्मणों को मिली यह संभवतः दूसरी बड़ी सफलता थी।

मणिपुर की हिंसा में मैतेईयों के दो संगठन सीधे तौर पर शामिल हैं, जिनके नाम 'अरामबाई तेंगगोल' और 'मैतेई लीपुन' है। 'अरामबाई तेंगगोल' एक पुनरुत्थानवादी समूह है, जिसका मानना है कि ईसाई मिशनरियां मैतेइयों का तेजी से धर्मांतरण कर रही हैं। यह संगठन ईसाई मैतेईयों को सनमही परंपराओं की ओर लौटाने की बात करता है। 2023 की हिंसा से पूर्व इसका इतिहास चर्च के पादरियों को डराने-धमकाने का रहा है। इसे मणिपुर से भारतीय जनता पार्टी के मौजूदा राज्यसभा सांसद लीशेम्बा सनाजाओबा का प्रश्रय प्राप्त है। दूसरी ओर 'मैतेइ लीपुन' एक हिंदुत्वादी संगठन है, जिसके मुखिया अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व कार्यकर्ता मायेंगबाम प्रमोतचंद सिंह हैं। दोनों ही संगठनों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का रणनीतिगत समर्थन हासिल है।

बहरहाल, मुद्दे पर लौटें। मणिपुर में ब्राह्मणों ने 16वीं से 18वीं शताब्दी तक धर्मांतरण अभियान चलाया और वे सफल रहे। अब हिंदु संगठनों को लगता है कि जो चीज 500 साल पहले मणिपुर के एक हिस्से में हो सकती थी, क्या वह पूरे पूर्वोत्तर में नहीं हो सकती? पूर्वोत्तर की अधिकांश आबादी का ईसाई बने रहना, उनकी आंखों की किरकिरी है। हालांकि यह संभावना तो नहीं है कि ईसाई मतालंबी धर्मांतरण कर हिंदू हो जाएंगे। लेकिन माना जाता है कि अगर अन्य धर्मालंबियों को आरक्षण के लाभ से वंचित कर दिया जाए, तो उन्हें हिंदू संस्कृति की ओर मोड़ना आसान हो जाएगा।

मणिपुर हिंसा की शुरुआत न्यायालय के एक आदेश के बाद हुई थी, जिसमें न्यायालय ने सरकार से मैतेई समुदाय को अनुसूचित जनजाति (एसटी) की सूची में शामिल करने पर विचार करने को कहा था। यह देखकर दुख होता है कि उत्तर भारत के लोगों की इस सबमें कोई रुचि नहीं है। हिंदी क्षेत्र के बुद्धिजीवियों और भाजपा-विरोधी राजनेताओं की भी मणिपुर में दिलचस्पी बस इतनी है कि इसके बहाने भाजपा पर कितना हमला किया जा सकता है। ऐसे कई लोग मुझसे फोन करके पूछते हैं कि मणिपुर के दंगे के कारण 2024 के आम चुनावों में पूर्वोत्तर में भाजपा हारेगी या नहीं? उन्हें बस इतने से ही मतलब है।

लेकिन, इस तरह से विशुद्ध राजनैतिक होना ठीक नहीं है। इससे आप कोई दूरगामी परिणाम हासिल नहीं कर सकते। आपको तय करना चाहिए कि मणिपुर में कौन आततायी है और कौन शोषित? वहां कौन अभिजन है, कौन बहुजन? किस पर सत्ता का हाथ है और किसका नरसंहार किया जा रहा है? आप भाजपा के विरोध में हैं यह ठीक है, लेकिन आप मणिपुर के मामले में किसके पक्ष में हैं? आपको यह भी सोचना और कहना होगा। यह कहना कि आप मनुष्यता के पक्ष में हैं, पर्याप्त नहीं है। आपको यह तय करना होगा कि मनुष्यता किस पक्ष में है।

मुद्दा

डॉ. अजीत कुमार

लेखक इनवर्टिस यूनिवर्सिटी, बरेली में कृषि विभाग के सहायक प्रोफेसर हैं।

खराब गेहूं भंडारण व्यवस्था भविष्य के लिए एक बड़ी चुनौती

भारतीय कृषि व्यवसाय हमारे देश का मुख्य आधार है, जहाँ कृषि उत्पादकता को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया जाता है। जिनमें अनाज की फसल मध्य और उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में मुख्य फसल के रूप में जानी जाती है, जो देश के खाद्य सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए, गेहूं का सही भंडारण एक महत्वपूर्ण कृषि प्रथा रही है, जो हमारी खाद्य सुरक्षा की नीति को सुनिश्चित करने में मदद करती है।

गेहूं भंडारण के खेती संबंधित कई फायदे है, जिनमें पहला है, किसानों को उनके उत्पाद का अच्छी तरह से प्रबंधन करने की सुविधा देता है, जो किसानों के उत्पाद को अवशोषित करने में मदद करता हैं और साथ ही उनके लाभ को बढ़ाने में मदद करता हैं। दूसरा, गेहूं भंडारण खेती के अस्तित्व को बढ़ावा देता है। धान, मक्का और अन्य फसलों के साथ मिलाकर, गेहूं भंडारण क्षमता किसानों को उनकी उत्पादनता को सुरक्षित रखने में मदद करती है, खासकर जब बाजार में गेहूँ के भावों की चर्चा होती है, तो किसानों के सामने गेहूं भंडारण के लिए सही जगह का चयन करने पर दो बड़ी चुनौती होती हैं। जिनमें पहला, गेहूं को सही स्थान पर और सही तापमान में भंडारित किया जाना चाहिए। विभिन्न भंडारण विकल्पों में जैसे कटिबंध, गोदाम या सीलड बिन्स आदि उपयुक्त हो सकते हैं। दूसरा, गेहूं भंडारण क्षेत्र को सुरक्षित और स्वच्छ रखना चाहिए ताकि कीट-रोगों और नकली दवाओं के प्रकोप से बचा जा सके।

हमने कई बार देखा है कि गेहूँ भंडारण की उचित व्यवस्था न होने के चलते खुले आकाश में सैंकड़ों टन गेहूं सड़ जाता है, मौसम का बदलता मिजाज खेतों में खड़ी गेहूं की फसल को भारी नुकसान पहुंचाता है। पिछले कई सालों से यही परिणाम देखने को मिल रहे हैं। उत्तर भारत में जब भी गेहूं की फसल पकाई या कटाई होने को आती है, तो ऐसे में मौसम एक बार करवट बदलता ज़रूर है, जिससे किसानों की सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। वर्ष 2023 के अप्रैल माह में किसानों को भारी बारिश की वजह से बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। इस वर्ष एक बार फिर कटाई के समय पर मौसम आंख मिचोली का खेल रहा हैं, लेकिन अब किसान पुरानी गलती को दोहराना नही चाहते है। इसलिए किसान सही समय पर कटाई करके गेहूं की फसल को भंडारित कर सकते हैं।

गेहूं भंडारण विधि कई तत्वों पर निर्भर करती है, जैसे फसल के प्रकार, भंडारण के लिए उपलब्ध संसाधन और उपयोग किए जाने वाले उपकरणों की उपलब्धता। गेहूं भंडारण के कुछ महत्वपूर्ण चरणों को विस्तार से समझा जा सकता है, जो किसानों के लिए भंडारण विधि को समझने में मदद कर सकते हैं-

स्थान का चयन: भंडारण के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करें। यह एक सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान होना चाहिए, जिसमें फसल को सहेजा जा सकता है। ध्यान दें कि यह स्थान अच्छे हवाई दाब और तापमान के लिए उपयुक्त हो।

उपकरण का चयन: गेहूं को भंडारित करने के लिए उपयुक्त भंडारण साधन चुनें। कटिबंध, गोदाम या सील्ड बिन्स जैसे उपकरणों को उपयोग कर सकते हैं। उपकरण को सुनिश्चित करें कि वह फसल को अच्छे तापमान और आवश्यक वातावरणीय शर्तों में रख सकता है।

साफ-सफाई और संरक्षण: भंडारण क्षेत्र में कीट-रोग से बचने के लिए नियमित तौर पर सफाई बहुत ज़रूरी है। साथ ही, उपयुक्त सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करें, ताकि फसल को किसी भी तरह के नुकसान होने से बचाया जा सके।

उचित तापमान और नमी का नियंत्रण: गेहूं को भंडारित करते समय उचित तापमान और नमी को बनाए रखें, ताकि फसल लंबे समय तक अच्छी गुणवत्ता में टिक सके।

नियमित मॉनिटरिंग: गेहूं भंडारण को नियमित रूप से मॉनिटर और नियंत्रित किया जाना चाहिए। इससे नुकसान कम होगा और फसल की गुणवत्ता भी बेहतर हो सकेगी।

गेहूं भंडारण उन क्षेत्रों में बहुत जरूरी होता है, जहां गेहूं को एक मुख्य खाद्यान्न के रूप में सबसे ज्यादा अहमियत दी जाती है और जहां उसकी उत्पादकता अधिक होती है।

खाद्य सुरक्षा: गेहूं एक महत्वपूर्ण अनाज है जो लाखों लोगों के लिए मुख्य आहार है। इसलिए, गेहूं भंडारण से यह सुनिश्चित किया जाता है कि खाद्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है, खासकर जब किसानों के प्रयासों के दौरान प्राकृतिक आपदाओं या अन्य अनियंत्रित परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

बाजार संतुलन: गेहूं भंडारण से, उत्पादकों को विपणन के लिए समय का अवलंबन करने में मदद मिलती है। इससे बाजार में उत्पादों की उपलब्धता को संतुलित रखा जा सकता है, जिससे मूल्य में अस्थिरता को कम किया जा सके।

अवसरों का संरक्षण: गेहूं भंडारण से अवसरों को संरक्षित किया जा सकता है। यह गेहूं उत्पादन की अधिकतम मात्रा को सुनिश्चित करने में मदद करता है, जिससे किसान अच्छे मूल्य में अपने उत्पादों को बेच सकते हैं।

गुणवत्ता का संरक्षण: गेहूं भंडारण से उत्पादों की गुणवत्ता को सुरक्षित रखा जा सकता है। यह उत्पादों को कीट-रोग और नकली आकारों से बचाता है, जिससे उत्पादों की गुणवत्ता और लंबी अवधि सुनिश्चित की जा सकती है।

फसल कटाई के इस मौसम में गेहूं भंडारण की डिमांड बढ़ने से किसानों को चिंता सताने लगती है। केंद्रीय कतई उपरांत अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के अनुसार, भारत में कटाई के दौरान और कटाई के तुरंत बाद प्रमुख फसलों के कुल उत्पादन का 4.65 से लेकर 5.99 फीसदी व्यर्थ हो जाता है। यानी फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान के कारण अनाजों का अवैज्ञानिक भंडारण जिससे कीटों चूहों और अन्य सूक्ष्म जीवों द्वारा इन खाद्यानों को नष्ट कर दिया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत में प्रतिवर्ष कटाई के बाद अनाज के नुकसान की मात्रा 12 से 16 मिलियन टन है। अशोक डलवाई समिति की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत में अनाजों के भंडारण तथा उसके यातायात संबंधी सुविधाओं को व्यवस्थित करने के लिए 89, 375 करोड़ रुपए की आवश्यकता है, जो प्रतिवर्ष कटाई के बाद होने वाले नुकसान से भी कम है। लेकिन फसल की कटाई के बाद भारतीय किसानों को प्रतिवर्ष लगभग 92,651 करोड रुपए का नुकसान होता है, जिसका मुख्य कारण कमजोर भंडारण की व्यवस्था मानी जाती है।

इसलिए, गेहूं भंडारण को सही और संगठित ढंग से प्रबंधित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। गेहूं भंडारण कृषि व्यवसाय के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती हो सकता है, लेकिन उचित तकनीकी ज्ञान और संचालन के साथ, यह एक सफल और लाभकारी प्रक्रिया बन सकता है। इससे न केवल किसानों को लाभ मिलेगा, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलेगा।

राम आएंगे तो हिसाब होगा

कटाक्ष

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार हैं।

राम आएँगे तो हिसाब होगा इलेक्टॉरल बॉन्ड का। राम आएँगे तो जिसने बैंक, रेल बेच डाली उसका हिसाब होगा। राम आएँगे तो जिसने भेल जैसी तमाम सार्वजनिक कम्पनियां बेच डालीं, उसका हिसाब होगा। जिन्होंने कोरोना भगाने के नाम पर ताली, थाली, बजवा, टार्च, दिए, मोमबत्ती जलवा कर ढोंग-ढकोसला फैलाया हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा। नोटबंदी करके, जिसने काला धन वापिसी के नाम पर पूरा देश लाइन में लगा दिया हो। उद्योग धंधे चौपट कर दिए हो, पर काला धन आया धेला न हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा। जिसने बगैर किसी तैयारी के कोरोना काल में एकदम से तालाबंदी करके हजारों किलोमीटर लोगों को पैदल चला कर लहूलुहान कर दिया हो, उद्योगों को चौपट कर दिए हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा।15 लाख

खाते में आयेगा, दो करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा, जिसने ऐसे तमाम झूठे आश्वासन दिए हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा। जिसने 300 वाला सिलिन्डर हजार तक पहुँचाया, जिसने 60 वाला पेट्रोल 110 तक पहुँचाया, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा। जिसने 399 वाला रिचार्ज 719 तक पहुँचाया, फ्री बनने वाले आधार पर शुल्क लगाया, शिक्षा मंहगी की, राम आएंगे तो इसका हिसाब होगा।

जहाँ चार साल बाद 24 साल में अग्निवीर रिटायर किए जा रहे हो, वहाँ 73 साल का बुजुर्ग बाई रोड हेली कॉप्टर से चल कर देश चलाने की बात कर रहा हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा।

जिसने आदिवासी राष्ट्रपति को नये संसद भवन के उद्घाटन में और राम मंदिर के उद्घाटन में न बुलाया हो राम, आएँगे तो इसका हिसाब होगा। जिसके राज्य में किसानों को थार चढ़ा कर मरा गया हो, राम आएंगे तो इसका हिसाब होगा। जिसने किसानों की राह में कीलें ठुकवाई हों उनकी सांविधानिक अभिव्यक्ति पर लाठियाँ चलवाई हो पानी की धार मारी हो, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा। जिसके राज्य की पहलवान बेटियाँ सड़कों पर न्याय के लिए, अपनी आबरू के लिए जार-जार रोईं हों। राम आएंगे तो इसका हिसाब होगा। जिसके राज्य में न्याय के लिए रोते भटकते परिवार को दूर रख उसकी दुष्कर्म पीड़िता मृत दलित बेटी मनीषा आधी रात में जलाईं जातीं हों, राम आएँगे तो इसका हिसाब होगा, जो विकास के नाम पर नहीं राम के नाम वोट मांग रहे हो, गोदी मीडिया से साम्प्रदायिक सद्भाव खराब करवा कर ओछी राजनीति कर रहे हों राम आएंगे तो इसका हिसाब होगा।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

ललित उपमन्यु

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मच्छरों की फूट और मेरी 'बांट-नीति'

रात का अंतिम प्रहर है। श्वसन तंत्र से उपज रही हल्की खर्राहट के अलावा शयन कक्ष में अमूमन शांति थी। तभी कानों पर एक चेतावनी सुनाई दी, जिसका लब्बोलुआब यह था कि मलेरिया तेरे सिर पर मंडरा रहा है मानव। सावधान हो जा। हालांकि, हमले का 'उचित कारण' मुझे बताया नहीं गया, फिर भी मैं शत्रु की इस अदा पर मुग्ध हो गया कि उसने 'अपनों' की तरह पीठ पीछे वार करने के बजाए जंग की 'आचार संहिता' का पालन कर मुझे बाकायदा आगाह किया था। आक्रमण के पूर्व होने वाली हर भुनभुनाहट के आरोह-अवरोह समान होने से मैं समझ नहीं पा रहा था कि हमलावर एक-दो ही हैं या समूह में हैं। मैं संभलता उससे पहले ही हवाई हमले शुरू हो गए। मेरे पास जमीन से हवा में मार करने वाली कोई तकनीक नहीं थी। सुरक्षा के नाम पर ले-देकर चादर से बना एक 'एंटी डंक' डोम था जिसमें छुपकर दुश्मन से बचा जा सकता था, लेकिन युद्ध 39.8 डिग्री तापमान में लड़ा जा रहा था। मुझे खुले में ही लड़ना था। दुश्मन ने मेरी इस बेबसी का फायदा उठाकर शरीर पर कई जगह आपात लेंडिंग कर जमीनी हमले भी किए। देखते ही देखते शयन कक्ष में जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। जान-माल पर आसन्न संकट के बीच चौरतफा घिरा मैं आत्मरक्षार्थ अंधेरे में हाथ-पैर चलाने लगा, लेकिन जवाबी हमले के मेरे सारे प्रयास व्यर्थ गए।

मेरे पास जंग से निपटने की अब दो-तीन ही युक्तियां थीं। मच्छरों से संधि वार्ता कर मसला सुलझा लूं। वे थोड़ा सा खून पिएं और बैरक में लौट जाएं, शेष समय मैं सो सकूं, लेकिन इसकी गुंजाइश कम ही थी, आखिर मनुष्य और मच्छर दोनों के लक्ष्य मनुष्य को 'काटना' ही हैं। छुपकर 'काटे' या खुलकर। वे अपने कार्यक्षेत्र में प्रतिद्वंद्वी को प्रवेश कैसे दे सकते थे। वैसे भी वे आज के दौर के मच्छर थे, जिन्हें इधर बात करके, उधर चले जाने में महारत थी। मैंने यह भी सोचा कि पूरा तन-मन ही शत्रु को समर्पित कर दूं। इतनी जगह खून पिया जा रहा है, एक ये भी पी लेंगे तो कौन सा 'कंकाल' हो जाऊंगा, लेकिन मेरा ये समर्पण उन घूसखोरों, मिलावटखोरों, धोखेबाजों के साथ अन्याय होता जिनका नाम मेरे खून के कतरे-कतरे पर लिखा है। वे बेचारे क्या पियेंगे। मुझे पता था, मेरा शरीर भले ही बिस्तर पर है, लेकिन आत्मा 'जनहित' में बाहर ही भटक रही है।

अंतिम विकल्प के तौर पर मैंने रणभूमि से पलायन का भी विचार किया। न रहूंगा मैं, न काटेंगे मच्छर। पूरा घर पड़ा है, किसी भी कमरे में शरणार्थी बनकर रात गुजार लूंगा, लेकिन मेरे भाग जाने से हमले 'पड़ोसी' राजधानी पर शुरू हो जाते, जो चादर के बंकर में सुरक्षित सोई हुई थीं। उनकी नींद में खलल का मतलब था और ज्यादा खतरनाक युद्ध को आमंत्रण देना। मैंने दोनों पक्षों के खून पीने का 'तुलन-पत्र' बनाया। मुझे मच्छर ज्यादा किफायती और उदार लगे। वैसे भी विवाह के वक्त कान में जो पांच-सात मंतर फूंके गए थे उसमें कहीं भी मच्छरों के हमले में 'पड़ोसी' को सोता छोड़कर भागने या नहीं भागने की स्पष्ट व्याख्या नहीं थी, लेकिन सात जनम तक साथ निभाने वाले अंतिम बिंदु में हर हाल में साथ डटे रहने का समग्र संदेश था। मैंने बिस्तर से भागने का विचार त्याग दिया।

युद्ध लंबा खिंचता जा रहा था। वे काटने वाली अपनी 'कट्टर' विचारधारा पर अडिग थे और मैं उनका हृदय परिवर्तन नहीं कर पा रहा था।

सारे प्रयास असफल हो गए तो मैंने 'बांट-नीति' इस्तेमाल की। पूरी देह चादर में छुपाई और केवल एक हाथ बाहर निकालकर रख लिया। योजना सफल रही। जो मच्छर अब तक उड़-उड़कर, अंगों की खुली जगह ढूंढ-ढूंढकर मेहनत का खून पी रहे थे, वे 'मुफ्त' माल के चक्कर में हाथ पर आकर बैठने लगे। उनके शुरुआती चाल-चलन से मुझे लग गया कि इनमें समन्वय की कमी है, आपसी गठबंधन भी नहीं है। वे समूह में आने के बजाए अलग-अलग आ रहे थे। उनकी संवादहीनता, अवसरवादिता और मतभेद का फायदा उठाते हुए मैंने दूसरा हाथ बाहर निकालकर तड़ातड़ हमले शुरू कर दिए। शत्रु पक्ष को भारी क्षति पहुंची। भुनभुनाहट कम होने लगी। कुछ ही देर में शयनकक्ष में शांति छा गई। सुबह बिछौने पर सत्रह रक्त रंजित लाशें बरामद हुईं। मैं विजेता की तरह उठा और मुस्कराता हुआ आईने के सामने जा खड़ा हुआ।

वक्रोक्ति

सुनील सक्सेना

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जेब में डले हाथ का स्वेग और खुजली कथा

गोलू भैया को चुनाव में टिकिट मिलने की घोषणा होते ही रातों-रात उनके आदमकद पोस्टर नई बनी फोरलेन सड़क के बीचों बीच लगे बिजली के पोलों पर लग गए। फोटो में कनपटी तक फैली मुस्कान, तलवार सी तनी मूछें और हमेशा की तरह गोलू भैया अपना दायां हाथ जेब में डाल हुए थे। ये उनका चिरपरिचित मोहित करने वाला पोज है, जिसके लोग दीवाने हैं।

क्या आम और क्या खास हरेक ये जानने के लिए बेताब रहता है कि आखिर ऐसा क्या है गोलू की जेब में कि वे सदा जेब में हाथ डाले रहते हैं। किसी की मैयत में हों, शादी-ब्याह में हों, कोई रैली हो, पब्लिक मीटिंग हो, पार्टी मीटिंग हो गोलू भैया का राइट हेंड जेब में ही रहता है। यदाकदा वे रिलेक्स होने के लिए जेब से हाथ बाहर निकालते हैं, लेकिन चंद पलों में हाथ वापस जेब में चला जाता है। उनके इस अंदाज की दीवानगी का आलम ये है कि जनसभा में भाषण देते वक्त जब कभी आवेश में गोलू भैया का हाथ जेब से बाहर आ जाता है तो पब्लिक गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाने लगती है गोलू भैया हाथ जेब में हाथ जेब में। जेब के प्रति उनका ये अगाध प्रेम जनता जर्नादन में अबूझ पहेली बना हुआ है। गोलू भैया की इस आदत के पीछे के कई किस्से, अफसाने मशहूर हैं। जितने मुंह उतनी बातें। लेकिन हकीकत क्या है कोई नहीं जान पाया। सब अटकले हैं। कयास हैं।

वे लोग जिन्होंने गोलू के गुर्बत के दिन देखे हैं, बताते हैं कि अड़ोसी-पड़ोसी अपने बच्चों के उतरे हुए कपड़े गोलू को पहनने के लिए दे देते थे। लूज कमीज, टीशर्ट तो गोलू कैसे भी अटा लेते, लेकिन ढीली-ढाली नेकर कमर पर टिकती नहीं थी। नेकर निबकती रहती। गोलू को जब भी लगता नेकर गिर रही है, तुरंत हाथ जेब में डालकर उसे ऊपर खिसका लेते। यहीं से उनके हाथ और जेब में ऐसी घनिष्टता हुई कि नेकर न भी खिसक रही हो, गोलू जेब में ही हाथ डाले रहते।

कुछ बताते हैं कि गोलू जब किशोर और युवा वय के संधी काल से गुजर रहे थे तो उन्हें लेमन की रंगबिरंगी मीठी गोलियां चूसने का बड़ा शौक था। पढ़ाई में तेज गोलू को वजीफा मिलने लगा। गोलियां जेब में भरी रहतीं। खुद खाते। मोहल्ले के बाल-गोपालों को भी खिलाते। कहीं कोई बच्चा-बच्ची नजर आता जेब से फटाक गोली निकाल कर दे देते। गोलू बच्चों में गोलू चाचा के नाम से फेमस हो गए। छोटे तो छोटे बड़े भी गोलू चाचा कहकर पुकारने लगे। गोलू जगत चाचा हो गए।

एक दिन अखबार में कहीं की खबर छपी 'टॉफी का लालच देकर बच्ची से किया दुष्कर्म, कुकर्मी जेल में'। मुन्ना दर्जी जो गोलू के पक्के सखा हैं, खैरख्वाह, हमराज, हम निवाला-हम प्याला हैं, ने गोलू को समझाया कि देखो गुरू तुम्हें राजनीति में लंबी रेस का घोड़ा बनना है। ये बच्चों को लेमन की गोलियां बांटना छोड़ो। जमाना खराब है। किसी भी दिन मुसीबत में पड़ जाओगे। गांव के तेजस्वी बच्चे स्कूल में 'गुड टच-बेड टच' क्या होता है जानकर कर, सयाने हो गए हैं। कहीं कोई लांछन-वांछन लग गया न तो नेतागिरी तो एक तरफ जिंदगी भर किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहोगे। गोलू अपने बगलगीर मुन्ना की बात को टाल नहीं सकते थे। लिहाजा उनका लेमन की गोलियां चूसने का चस्का तो छूट गया, लेकिन जेब में हाथ डाले रखना जस का तस बना रहा ।

कॉलेज के दिनों के साथी बताते हैं कि छः फुटिया गोलू अमिताभ बच्चन के बड़े वाले फैन थे। बच्चन साहब की तरह एक हाथ जेब में डाले थोड़ा दांए कंधे को झुकाए जब गोलू कॉलेज में हाय-हाय कहते हुए चलते तो कयामत ढाते थे। कॉलेज की लड़कियां जो गोलू को कभी चाचा कहतीं थीं, सात जन्मों तक गोलू के साथ पति के रिश्ते में बंधने के लिए मरी जा रहीं थीं। फेसबुक, इंस्टाग्राम पर गोलू अपनी जेब में हाथ डाले फोटो, रील डालते तो लाइक्स का अम्बार लग जाता। हजारों फॉलोअर्स हो गए। देखते-देखते गोलू सोशल मीडिया के टॉप इन्फुलेंसर्स में शुमार हो गए ।

इस विस्फोटक और चकित कर देने वाली गोलू की लोकप्रियता पर घाघ नेताओं की गिद्ध दृष्टि पड़ी। गोलू भैया को प्राप्त जनसमर्थन को जनादेश में बदलने की प्रबल संभावनाएं राजनीतिक पार्टियों को दिख रहीं थी। चुनांचे आने वाले चुनाव में गोलू को टिकिट मिल गया।

गोलू भैया की रहस्यमयी जेब पर से परदा उठाने के लिए समूचा विपक्ष एकजुट हो गया। इस अमृत काल में ऐसी कौनसी जादू की पुड़िया जेब में धरे गोलू भैया घूमते हैं कि जहां पांव रखते हैं हजारों राहें फूट जाती हैं। पता करो, ढूंढो कहीं तो कोई विभीषण होगा, कहीं तो कोई शोले फिल्म का हरिराम नाई टाइप का मुखबिर होगा जिसे गोलू भैया की जेब की सच्चाई मालूम होगी। इधर जब घर-घर में गोलू भैया को वोट दो की अपील वाले पर्चे बंटे तो विपक्षी दलों ने जनता के बीच जाकर खूब हल्ला माचाया। वोट तो हाथ जोड़कर मांगे जाते हैं पॉकेट में हाथ डालकर नहीं। वोटर भाइयो सोचिए ये आदमी अभी इतना एटीट्यूड दिखा रहा है तो जीतने के बाद तो ये आपको अपनी जेब में रखकर घूमेगा। जेब चुनावी मुद्दा बन गया।

विपक्ष की मेहनत, एकता रंग लाई। कमजोर कड़ी हाथ लग गई। मुन्ना दर्जी। संगत से रंगत बदल जाती है। गोलू के साथ रहते-रहते मुन्ना दर्जी को भी नेतागिरी का कीड़ा लग गया। गोलू को विपक्ष का साझा उम्मीदवार बनाने का प्रलोभन काम कर गया। मुन्ना दर्जी ने रामलील मैदान में अपार जनसमूह के सामने गोलू भैया की जेब का पर्दाफाश कर दिया। गरजते हुए बोले मित्रो गोलू भैया कि जेब सिर्फ दिखाने भर की है। वो जेब है ही नहीं। पोली है। हाथ डालो तो आरपार हो जाता है। अब आप पूछेंगे कि फिर ऐसी जेब किस काम की? तो मैं बताता हूं। सुनना चाहेंगे कि नहीं। जोर से बोलिए सुनना चाहेंगे। पब्लिक चीखने लगी। सुनना चाहेंगे.. बताइये.. बताइये..।

तो बहनो भाइयो असली राज ये है कि गोलू भैया को खाज है। वो भी ऐसी जगह पर है कि सार्वजनिक जीवन में रहने वाला व्यक्ति सार्वजनिक स्थल पर सबके सामने खुजा नहीं सकता। अशोभनीय लगता है। ये पीड़ा जब गोलू भैया ने हमें यानी आपके इस मुन्ना दर्जी को बताई तो इस नाचीज़ ने ही उनको ये पोली जेब का आइडिया बताया। गोलू भैया खुजली की असहनीय पीड़ा से त्रस्त हस्बेमामूल जेब में हाथ डाले रहते। जब मची तो खुजा लिया। आप भोले-भाले बहनों-भाइयों को लगा कि ये उनकी शोख़ अदा है, स्टाइल, स्वेग है। बरसों से आप बेवकूफ बनते रहे और वे 'आइकॉन' बन गए। साथियों, ये आपकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ है। धोखा है। विश्वासघात है। जनता गोलू भैया हायज्हाय करने लगी।

विपक्ष की बांछे खिल गईं। तिल मिल गया, बस ताड़ बनाना था। अगले वक्ता ने मंच संभालते ही मुन्ना दर्जी की खोदी सुरंग को और गहरा कर दिया। बात गोलू भैया के चर्मरोग से गुप्त रोग पर पहुंच गई। गोलू भैया की छैला बाबू वाली इमेज की धज्जियां उड़ने लगीं। रसिया, रंगबाज, चरित्रहीन, औरतखोर, जैसे विशेषण गोलू भैया के बायोडाटा में विपक्ष ने जोड़ दिए । मामला गरमा गया। फिजां बदल गई। गोलू भैया की सीट खतरे में पड़ती दिखने लगी।

लेकिन गोलू भैया सत्ताधारी पार्टी के उम्मीदवार थे। सत्ताधारी को इच्छाधारी नाग की तरह प्रिवलेज है कि वो जब चाहे जैसा चाहे रूप धर सकता है। ईंट का जवाब पत्थर से तो आना ही था। रूलिंग पार्टी ने यत्र-तत्र सर्वत्र जितने भी यंत्र-तंत्र, अस्त्र-शस्त्र संसाधन उपलब्ध थे, झोंक दिए गोलू भैया की इमेज बिल्डिंग में।

एक दिन भिनसारे मुन्ना दर्जी के रेसीडेंस कम शॉप के सामने बुलडोजर खड़ा था और सरकारी अमले के सामने मुन्ना दर्जी हाथ जोड़े खड़े थे।

'मकान न तोड़ो मालिक.. सड़क पर आजाएंगे बाल बच्चे'।

'अबे ये तो करने से पहले सोचना था। एक उभरते हुए नेता की इज्जत की मट्टी पलीद कर दी तू ने।

'हुजूर हम ने डेमेज किया है हम ही ठीक कर देंगे'

'कैसे..?'

'हम गोलू भैया के समर्थन में अपना नाम वापस ले लेंगे। पब्लिक मीटिंग में कह देंगे कि गोलू भैया की जेब में कोई पोल नहीं है। उनकी जेब में कंठीमाला धरी रहती है, रामनाम की। वे राम भक्त हैं। जेब में हाथ डाले गोलू भैया राम नाम जपते रहते हैं।'

तमाशबीनों के बीच में से किसी ने 'जय श्रीराम' का उद्घोष किया। हमारा नेता कैसा हो..गोलू भैया जैसा हो, के नारे लगने लगे। वातावरण गोलूमय हो गया। हवा बदल गई। लहर चल गई। बुलडोजर ड्राइवर ने रिवर्स गेअर डाला और भीड़ के साथ चल दिया।

जल संकट

आरती

तपती गर्मी में खारे पानी की सजा

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है गांव में पानी की समस्या भी बढ़ती जा रही है. जो स्रोत उपलब्ध हैं उसमें इतना खारा पानी आता है कि हम लोगों से पिया भी नहीं जाता है. यदि मजबूरीवश पी लिया तो पेट में दर्द और दस्त होने लगते हैं. पिता जी और गाँव वाले मिलकर पानी का टैंकर मँगवाते हैं, जिससे हमें पीने का पानी उपलब्ध होता है. लेकिन स्कूल में ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं है. वहां हमें यही खारा पानी पीने पर मजबूर होना पड़ता है. इसलिए स्कूल भी जाने का दिल नहीं करता है. यह कहना है 9वीं कक्षा की छात्रा 15 वर्षीय किशोरी पूजा राजपूत का, जो राजस्थान के बीकानेर स्थित लूणकरणसर ब्लॉक के कालू गांव की रहने वाली है. पूजा के साथ खड़ी उसकी हम उम्र दोस्त कविता कहती है कि घर पर टैंकर के माध्यम से पीने का पानी उपलब्ध हो जाता है, परंतु स्कूल में इतना अधिक खारा पानी आता है कि उसे पीने के बाद बच्चों की तबीयत खराब हो जाती है. जैसे जैसे गर्मी बढ़ रही है पानी की आवश्यकता भी बढ़ेगी, ऐसे में हमें स्कूल में वही खारा पानी पीना पड़ेगा.

वास्तव में, राजस्थान में जैसे जैसे गर्मी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है वैसे वैसे कालू गाँव और उसके जैसे अन्य गांवों में पीने के पानी की समस्या भी विकराल होती जा रही है. ब्लॉक मुख्यालय से 20 किमी और जिला मुख्यालय बीकानेर से 92 किमी दूर आबाद कालू गाँव की जनसंख्या लगभग 10334 है. अनुसूचित जाति बहुल इस गाँव के लोगों के लिए सितम यह है कि प्रचंड गर्मी के साथ साथ उन्हें पीने के साफ पानी की समस्या से भी जूझना पड़ रहा है. गाँव में कुछ स्थानों पर पानी के जो स्रोत उपलब्ध हैं, इनमें फ्लोराइड की मात्रा इतनी अधिक है कि वह पानी खारा हो चुका है जो पीने के लायक नहीं होता है. इतना ही नहीं, पूरे गाँव में समान रूप से सभी घरों में पीने का पानी भी नहीं आता है. दरअसल गाँव की बसावट कुछ इस प्रकार है कि कुछ घर ऊंचाई पर हैं और कुछ घर नीचे की तरफ ढलान पर आबाद हैं. गांव में पानी ट्यूबवेल के माध्यम से आता है. सभी घरो में पाईप लाईन लगी हुई है. ऐसे में, जिनके घर ढलान (नीचे की तरफ) पर हैं उनके घरों में तो पानी आसानी से पहुंच जाता है. लेकिन जिनके घर ऊंचाई पर स्थित हैं वहां पानी पहुंचने में समस्या आती है.

इस संबंध में 45 वर्षीय जगदीप कहते हैं कि 'जैसे-जैसे राज्य में गर्मी का प्रकोप बढ़ रहा है, वैसे वैसे पानी की समस्या भी बढ़ती जा रही है. पहले गाँव में बावड़ी समेत पानी के बहुत सारे प्राकृतिक स्रोत हुआ करते थे. लेकिन बेहतर रखरखाव नहीं होने के कारण धीरे धीरे या तो सभी सूख चुके हैं या

उनमें इतना खारा पानी होता है कि उसे हम अपने मवेशियों को भी नहीं पिला सकते हैं. वर्तमान में गाँव में ट्यूबवेल के माध्यम से पानी आता है, लेकिन हमारे घर जो ऊंचाई पर स्थित हैं, वहां ट्यूबवेल के माध्यम से पानी आने में समस्या आती है. ऐसे में हमें या तो कहीं स्रोत ढूंढ कर पानी लाना होता है अथवा पैसे देकर टैंकर मंगवानी पड़ती है. जो बहुत ही महंगा पड़ता है. एक बार में टैंकर मंगवाने पर 1500 रुपए तक का खर्च आता है. हमारी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि हम बार बार पानी का टैंकर मंगवा सकें. जब ज्यादा गर्मी पड़ती है तो टैंकर भी हमें कई बार समय पर उपलब्ध नहीं हो पाता है. ऐसे में फिर मटके से ही पानी भरकर लाना पड़ता है, वह भी बहुत दूर दूर से.'

खारे पानी की समस्या से परेशान गांव की एक महिला कमला देवी का कहना है कि 'गर्मी के दिनों में ट्यूबवेल से बहुत कम समय के लिए पानी आता है. ऐसे में हम बहुत मुश्किल से दूसरी जगहों से पीने का पानी इकठ्ठा करते हैं. कभी कभी तो एक दिन में 5 से 6 बार पानी लेने जाना पड़ता है. पानी के लिए हम महिलाओं को तपते रेगिस्तान में मीलों चलना पड़ता है. यही कारण है कि हम कपड़े भी दो या तीन दिनों में एक बार धोते हैं.' जब मनुष्यों के लिए मुश्किल से पानी इकठ्ठा होता है तो पशुओं विशेषकर मवेशियों के लिए कितनी बड़ी समस्या होती होगी इसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है. कमला देवी कहती हैं कि 'हमें अपने साथ साथ अपने मवेशियों के लिए भी पानी की चिंता करनी होती है. लेकिन जब हमें इतनी मुश्किल से पानी उपलब्ध होता है तो हम अपने मवेशियों के लिए कहां से प्रबंध कर सकते हैं? ऐसे में उन्हें वर्षा का इकठ्ठा किया हुआ पानी पिलाते हैं जो अक्सर दूषित होता है. इसे पीकर कई बार हमारे पशु बीमार भी पड़ जाते हैं. फ्लोराइड युक्त खारा पानी पीने से हमारी हड्डियां भी कमजोर होने लगी हैं. जिसकी वजह से चलने में बहुत थकान लगती है और कमजोरी भी महसूस होती है.'

वही गांव की एक अन्य महिला शारदा का कहना है कि 'हमें पीने के पानी के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है. गर्मी बढ़ने के साथ ही ट्यूबवेल से आने वाले पानी की समस्या भी बढ़ जाती है. हमारे घरों में सप्ताह में सात दिनों में केवल तीन दिन ही पानी आता है. वह भी कभी कभी इतना खारा होता है कि उससे पानी भर के केवल कपड़े ही धोने में इस्तेमाल किया जा सकता है. पीने का पानी हमें दूर दूर से लाना पड़ता है. पशुओं को पानी पिलाने के लिए घरों से दूर लेकर जाना पड़ता है.' वह बताती हैं कि 'यहां के पानी में नमक की मात्रा इतनी अधिक होती है जिसके कारण हमें जोड़ों के दर्द की समस्या होने लगी है, थकावट जल्दी लगने लगती है. कम उम्र में ही युवा पीढ़ी भी बुजुर्ग जैसे दिखने लगी है. वह अक्सर बीमार रहते हैं. हमारे पशुओं को भी खारे पानी से बहुत दिक्कत होती है. इसकी वजह से असमय ही कई मवेशियों की मौत हो जाती है. जबकि वही हमारी आय का एक प्रमुख साधन होते हैं. गाँव के युवा अपनी पढ़ाई छोड़कर ऊंटों के साथ दिन भर पानी की तलाश में भटकते रहते हैं. इस संबंध में गांव की सरपंच सुगनी देवी का कहना है कि 'गांव में खारे पानी की समस्या को दूर करने के लिए 3 ट्यूबवेल लगवाए हैं, जिसमें पीने योग्य पानी आता है. हालांकि इतनी बड़ी आबादी के लिए यह तीनों ट्यूबवेल कम हैं. इसलिए पंचायत ने सर्वसम्मति से ब्लॉक अधिकारी के पास अभी एक और बोरवेल लगाने का प्रस्ताव भेजा है. इसे जल्द पूरा करवाने के लिए तहसील कार्यालय में बात चल रही है. यदि चौथा ट्यूबवेल भी लग जाता है तो गाँव में पानी की समस्या लगभग दूर हो जाएगी और इस गर्मी में भी गांव वालों को पानी के लिए दर-दर भटकने की जरूरत नहीं होगी.' सरपंच इस बात को स्वीकार करती हैं कि गाँव में कुछ स्थानों पर खारा पानी आता है. वह कहती हैं कि 'हमने पानी की जांच करवाई है. कुछ जगहों पर पानी में फ्लोराइड की मात्रा ज्यादा है, लेकिन इतना भी नहीं है कि वह शरीर के लिए नुकसानदायक हो.'

बहरहाल, जैसे जैसे तापमान चढ़ेगा कालू गाँव के लोगों के लिए पानी की समस्या भी बढ़ती जाएगी. ऐसे में राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन को इस बात को गंभीरता से लेने की जरूरत है कि इंसान और पशुओं सभी के लिए समान रूप से पानी उपलब्ध हो जाए. विशेषकर स्कूलों में इसका विशेष प्रबंध किया जाए. प्रशासन को इस बात को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि कम से कम जहां पानी उपलब्ध है वह पीने योग्य हो ताकि कालू गाँव की महिलाओं और किशोरियों को तपते रेगिस्तान में पानी के लिए मीलों चलना न पड़े. (चरखा फीचर)

चुनाव 2024

आशीष कोठारी

लेखक 'कल्पवृक्ष' व 'विकल्प संगम' के साथ कार्यरत हैं।

(बाबा मायाराम द्वारा अनुवादित)

निराश करते समय में उम्मीद जगाता हुआ जन घोषणा पत्र

दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह, भारत भी कई संकटों का सामना कर रहा है: सत्तावादी राजनीतिक ताकतों का उदय, धार्मिक व जातीय दमन और संघर्ष, पारिस्थितिकी की बदहाली, बेरोजगारी आदि। इस बीच भारत सरकार अपनी नीतियों और कार्यक्रमों की आलोचना करने वाले कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और वकीलों के खिलाफ झूठे मामले दर्ज करके, विपक्षी सांसदों को थोक में निलंबित करके और विपक्षी पार्टी के चुने गये मुख्यमंत्रियों को गिरफ्तार करके लोकतांत्रिक आवाज़ों को दबाने की कोशिश कर रही है।

उपरोक्त संदर्भ में 85 जन-आंदोलनों और नागरिक समाज संगठनों द्वारा न्यायसंगत, समतामूलक और टिकाऊ भारत के लिए 'जन-घोषणापत्र' तैयार करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास किया गया है। ये समूह एक दशक पुराने राष्ट्रीय मंच 'विकल्प संगम' के तहत एकत्रित हुए हैं जो जैविक खाद्य उत्पादन, विकेंद्रीकृत जल संचयन और प्रबंधन, समुदाय-आधारित ऊर्जा उत्पादन, सम्मानजनक आवास और बस्तियां, सार्थक शिक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा, स्थानीय रूप से सशक्त निर्णय लेने, विनाशकारी परियोजनाओं के खिलाफ प्रतिरोध पर काम करने वाली सैकड़ों पहलों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस 'जन-घोषणापत्र' का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य भारत में 2024 के आम चुनाव हैं। नागरिक समाज को लगता है कि उपरोक्त मुद्दों को उठाना 'भारतीय जनता पार्टी' के उस विशाल किले में सेंध लगाने के लिए महत्वपूर्ण है जिसे धार्मिक और आर्थिक रूप से दक्षिणपंथी पार्टी के रूप में उसने हासिल किया है। घोषणापत्र में बड़ी संख्या में सिफारिशें या मांगें राजनीतिक सत्ता में बैठे लोगों या इसकी आकांक्षा रखने वालों पर केंद्रित हैं, लेकिन कई खुद नागरिक समाज के लिए भी हैं।

अर्थव्यवस्था को बदलना- 'सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी' के अनुसार बेरोजगारी के बहुत गंभीर संकट (2000 के दशक की शुरुआत में लगभग 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 2023 के अंत में लगभग 9 प्रतिशत तक) को ध्यान में रखते हुए, घोषणापत्र छोटे विनिर्माण, शिल्प, मूल्य-वर्धित उपज पर प्राथमिकता से ध्यान देने का आग्रह करता है। कृषि, वानिकी, मत्स्यपालन, पशुपालन और विकेन्द्रीकृत सेवाएं सम्मानजनक और उत्पादक आजीविका प्रदान कर सकते हैं। इन्हें व्यवहारिक बनाने के लिए हस्तनिर्मित और छोटे विनिर्माण के माध्यम से उत्पादित की जा सकने वाली सभी वस्तुओं और सेवाओं को, बड़े उद्योगों और संस्थानों की बजाय, उनके लिए आरक्षित किया जाना चाहिए जिनमें मशीनीकरण के कारण रोजगार में कमी हुई है।

'विकल्प संगम' ने अपनी वेबसाइट पर ऐसे प्रयासों के सैकड़ों उदाहरण संकलित किए हैं जिनमें ग्रामीण पुनरुद्धार की कहानियां हैं, जिनके कारण पलायन में कमी आई है और कई मामलों में शहरों और बड़े उद्योगों से गांवों और छोटे विनिर्माण या शिल्प की ओर फिर से लोग आ रहे हैं। कृषि या अन्य भूमि-आधारित व्यवसायों की दर्जनों कहानियां हैं, जिन्हें कभी-कभी 'होमस्टे-पर्यटन' जैसे नए व्यवसायों के साथ जोड़ दिया जाता है, जो लाभकारी होते हैं।

ऐसे उदाहरण युवाओं तक नहीं पहुंच पाते। इसका एक कारण है, ऐसी आर्थिक नीतियों का निरंतर वर्चस्व, जिसमें बड़े उद्योग को भारी सब्सिडी देना और छोटे या हस्तनिर्मित उत्पादन के लिए कुछ कम प्रयास करना शामिल है। पिछले कुछ दशकों में भारत में आर्थिक असमानता काफी बढ़ी है। 'विश्व असमानता रिपोर्ट -2022' के अनुसार सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोगों के पास देश की संपत्ति का 57 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि 'निचले' 50 प्रतिशत के पास सिर्फ 13 प्रतिशत। 1991 के तथाकथित 'आर्थिक सुधारों' से पहले, इनका हिस्सा 40 प्रतिशत से कुछ कम था।

लोकतंत्र को मजबूत करना- 'विकल्प संगम' के घटकों को एहसास है कि आर्थिक स्थानीयकरण, आत्मनिर्भरता, सम्मानजनक आजीविका और सामूहिक उत्पादन के लिये जरूरी हैं, कुछ मूलभूत राजनीतिक परिवर्तन। भारतीय राज्य की बढ़ती अधिनायकवादी प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए घोषणापत्र वास्तविक स्वराज की ओर बढ़ने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के सुझाव देता है। ध्यान रखें, तीन दशक पहले राजनीतिक विकेंद्रीकरण की दिशा में कुछ प्रगतिशील संवैधानिक और कानूनी बदलाव किये गये थे, लेकिन उन्हें अधूरा छोड़ दिया गया था।

इस संदर्भ में विशेष महत्व 73वें और 74वें संविधान संशोधनों का पूर्ण कार्यान्वयन का है, जिन्होंने ग्रामीण और शहरी समाज को कुछ शक्तियां

प्रदान कीं, लेकिन इससे भी आगे बढ़कर, लोकतंत्र के अधिक मौलिक या प्रत्यक्ष रूपों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए वित्तीय और कानूनी शक्तियों का हस्तांतरण भी किया। सामूहिक संसाधनों पर सामुदायिक प्रशासन और जमीन, प्रकृति, ज्ञान, प्रौद्योगिकी का प्रबंधन भी इसके लिए महत्वपूर्ण हैं।

चुनाव आयोग, जांच एजेंसियों और मीडिया जैसी स्वतंत्र मानी जाने वाली संस्थाओं के कामकाज में खुलेआम घुसपैठ और हस्तक्षेप को देखते हुए उन्हें राज्य से दूर करने के लिए कदम उठाने की मांग की गई है। पिछले कुछ वर्षों में शांतिपूर्ण असहमति पर नाजायज कार्रवाई पर टिप्पणी करते हुए घोषणापत्र में 'गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम' और 'राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम' जैसे बार-बार दुरुपयोग किए जा रहे कानूनों को निरस्त करने की मांग की गई है।

सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन- भारत विभिन्न प्रकार की अल्पसंख्यक आबादी (विशेष रूप से मुसलमानों, ईसाइयों, आदिवासियों या जनजातीय लोगों) की पारंपरिक और नई कमजोरियों के आधार पर अंतर-धार्मिक और अंतर-जातीय संघर्ष, घृणास्पद भाषण और धार्मिक असहिष्णुता से ग्रस्त है। घोषणापत्र में संवाद के मंच स्थापित करने और सह-अस्तित्व को बहाल करने, लंबे समय से चली आ रही समन्वयवादी परंपराओं को पुनर्जीवित करने का आग्रह किया गया है।

घोषणापत्र सभी रूपों में सांस्कृतिक विविधता की मान्यता, निरंतरता और पुनरुद्धार का आग्रह करता है। इसके लिए यह शैक्षिक प्रणाली में बदलाव का भी सुझाव देता है, जो दुर्भाग्य से एकरूपता के लिए एक मजबूत शक्ति बन गई है। उदाहरण के लिए शिक्षण में भारत की 780 जीवित भाषाओं को सक्षम बनाने की बजाय 20-25 राज्य-मान्यता प्राप्त भाषाओं का वर्चस्व है। घोषणापत्र मातृभाषा आधारित, गतिविधि-केंद्रित, सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी की जडों से जुडी शिक्षा की सिफारिश करता है और शिक्षा के लिए 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) का 6 प्रतिशत आरक्षित करने का सुझाव देता है।

घोषणापत्र में कहा गया है कि लोग निजी चिकित्सा देखभाल का सहारा लेने के लिए मजबूर हो रहे हैं और यह घरेलू खर्च पर एक बड़ा दबाव है। इसमें आग्रह किया गया है कि 'जीडीपी' का कम-से-कम 3 प्रतिशत स्वास्थ्य के लिए रखा जाए, जिसमें एक मजबूत सार्वजनिक क्षेत्र को वापस लाना, सामुदायिक क्षमताओं को बढ़ावा देना और भारत की कई पारंपरिक और नई स्वास्थ्य प्रणालियों को बढ़ावा देना शामिल हो। यह पर्याप्त पोषण, सुरक्षित पानी और स्वस्थ जीवन के अन्य निर्धारकों के माध्यम से खराब स्वास्थ्य को रोकने को प्राथमिकता देने के लिए भी कहता है।

पारिस्थितिकी सुरक्षा की ओर- भारत में सैकड़ों प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर हैं, 65 प्रतिशत से अधिक भूमि ख़राब हो गई है, अधिकांश जलस्रोत बुरी तरह प्रदूषित हैं, दुनिया के कई सबसे अधिक वायु-प्रदूषित शहर यहां हैं। कचरे की एक बड़ी समस्या, भोजन में कीटनाशकों जैसे विषाक्त पदार्थ और पानी सुरक्षित स्तर से काफी नीचे है और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पहले से ही लाखों लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। लोगों के संघर्षों और सरकार के भीतर कुछ प्रगतिशील तत्वों द्वारा 1970 के दशक में लाए गए कई कानूनों और नीतियों को अब व्यवस्थित रूप से कमजोर किया जा रहा है, ताकि कॉर्पोरेट्स को भूमि, जंगल, पानी और अन्य संसाधनों को हड़पने में सक्षम बनाया जा सके।

इसके मद्देनजर घोषणापत्र पारिस्थितिकी क्षरण को उलटने और प्रकृति की रक्षा के लिए कार्रवाई का आग्रह करता है। इसमें एक 'राष्ट्रीय भूमि और जलनीति' शामिल है, जो महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी मूल्यों (जैसे पानी और मिट्टी) की रक्षा करती हो। 'वन अधिकार अधिनियम' की तरह यह पारिस्थितिकी तंत्र पर सामूहिक अधिकारों के माध्यम से वन्य-जीवन और जैव-विविधता के प्रभावी और समुदायिक नेतृत्व वाले संरक्षण की मांग करता है।

घोषणापत्र 2040 तक भारत की खेती को जैव-विविधता पर आधारित तरीकों की तरफ पूर्ण रूप से परिवर्तित करने, खतरनाक विषाक्त उत्पादों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने और उत्पादन में भारी कटौती का आग्रह करता है। घोषणापत्र में प्लास्टिक और अन्य गैर-जैविक सामग्रियों पर प्रतिबंध, उन्हें पर्यावरण-संवेदी सामग्रियों से प्रतिस्थापित करने, समुदायों द्वारा प्रबंधित विकेंद्रीकृत जल-संचयन और प्रबंधन का सुझाव दिया गया है। विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा, 2030 तक जीवाश्म ईंधन और परमाणु ऊर्जा को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना और उर्जा की फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाना प्राथमिक मांगे हैं।

घोषणापत्र 'पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन' और वन मंजूरी प्रक्रियाओं को कमजोर करने के कदम वापस लेने और परियोजनाओं के प्रभाव मूल्यांकन को शुरू करने के लिए कहता है। एक 'राष्ट्रीय पर्यावरण आयुक्त' की सिफारिश की गई है जिसे उसी स्वतंत्र, संवैधानिक हैसियत का होना चाहिए जैसे 'चुनाव आयुक्त,' 'राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग' या 'नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक' हैं।

क्या कोई सुन रहा है?- 'विकल्प संगम' का घोषणापत्र एक विस्तृत 25 पेज का दस्तावेज़ है। भारत के सभी क्षेत्रों में इसे पढ़ा जा सके, इसलिये इसका कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है। घोषणापत्र जमीनी स्तर पर चल रहे संघर्षों से उभरे प्रत्यक्ष और जवाबदेह लोकतंत्र, आर्थिक आत्मनिर्भरता, पारिस्थितिक जिम्मेदारी और सामाजिक-सांस्कृतिक समानता की धारणाओं से युक्त है, लेकिन क्या इसे कोई सुनेगा? विशेष रूप से, क्या वे लोग जिनके हाथों में फिलवक्त अत्यधिक, केंद्रीकृत शक्ति है, सुनने और समझने के इच्छुक और सक्षम होंगे? क्या घोषणापत्र वर्तमान निराशाजनक प्रतीत होने वाली राजनीतिक और आर्थिक तस्वीर में कुछ बदलाव ला पाएगा? (सप्रेस)

फोरलेन पर चक्काजाम कर रहे ग्रामीणों से कलेक्टर ने की मुलाकात,आश्वासन के बाद खत्म हुआ चक्काजाम

बैतूल। गुरुवार की रात दस बैतूल के आसपास बैतूल इंदौर फोरलेन पर डीजे वाहन पलटने और एक टवेरा वाहन द्वारा ग्रामीणों को रौंदने की घटना में तीन लोगों की मौत के बाद शुक्रवार की सुबह दनोरा गांव के लोगों ने फोरलेन पर मृतकों के शव रखकर विरोध प्रदर्शन कर फोरलेन पर अंडरपास ब्रीज बनाने की मांग की।

सुबह 11 बजे ग्रामीणों ने फोरलेन पर चक्काजाम कर दिया और नारेबाजी शुरू कर दी चक्काजाम होने से सडक़ पर वाहनों की लंबी कतार लग गई थी द्य ग्रामीणों ने जमकर नारे बाजी और कलेक्टर एसपी को मौके पर आने की जिद पर अड़े रहे द्य चक्काजाम की सूचना पर पुलिस प्रशासन मौके पर मौजूद रहा।

चक्काजाम कर रहे ग्रामीणों को एडिशनल एसपी ने बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन ग्रामीणों ने एडिशनल एसपी की बात नही सुनी, ग्रामीण कलेक्टर को बुलाने की बात पर अड़े रहे।

कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी के आश्वासन पर ग्रामीणों ने बंद किया विरोध प्रदर्शन-

ग्रामीणों द्वारा किए जा रहे चक्काजाम की सूचना पर कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी मौके पर पहुचे और उन्होंने ग्रामीणों से चर्चा की और उन्हें आश्वासन दिया की ब्रिज बनाने की मांग को एनएचएआई के अधिकारियों तक पंहुचाएंगे और तत्काल प्रस्ताव बनाएंगे, तब जाकर ग्रामीणों ने चक्काजाम बंद किया।चक्काजाम कर रहे ग्रामीण शुभम ठोके ने बताया कि जबसे यह सडक़ बन रही थी, तभी से ग्रामीण गांव के पास अंडरपास ब्रिज बनाने की मांग कर रहे थे, क्योंकि ग्रामीणों के खेत इस सड़क के आसपास ही है और किसानो को अपने खेतों पर फोरलेन को पार करके जाना पड़ता है, यंहा आए दिन घटनाएं हो रही है। बीती रात भी भीषण दुर्घटना में तीन लोग की जान चली गई। इसलिए चक्काजाम किया गया और प्रशासन को अपनी समस्याएं बताई है।

इनका कहना-

दनोरा गांव के पास बहुत ही दुखद घटना हुई है, जिसमे तीन लोगों की मौत हो गई है। ग्रामीणों की मांग है कि फोरलेन पर अंडरपास बनाया जाय। इस संबंध में सुधार प्रस्ताव एनएचएआई की टीम को तत्काल भेजेंगे, साथ ही हम मृतकों के परिवार के साथ है, उन्हे तत्काल सहायता प्रदान करेंगे।

-नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी कलेक्टर बैतूल

उपभोक्ता आयोग बैतूल का आदेश, चोला मण्डलम बीमा कंपनी देगी गाय का बीमा

बैतूल। चिचोली तहसील के ग्राम नसीराबाद के किसान उषा पति रमेश लोखण्डे की 2 गाय की मृत्यु अज्ञात बीमारी से हो गई थी। चोला मण्डलम बीमा कंपनी द्वारा गाय का बीमा करने के बावजूद मृत्यु होने पर बीमा राशि नहीं दी जा रही थी, किसान द्वारा उपभोक्ता आयोग में आवेदन देने के बाद आयोग के आदेश के अनुसार किसान को 42 हजार रूपये बीमा राशि वाद व्यय व मानसिक संत्रास सहित मिलेंगे। यह आदेश आयोग के अध्यक्ष/न्यायाधीश विजय कुमार पाण्डेय व मान. सदस्य चन्द्रशेखर माकोड़े द्वारा दिया गया है।

एडवोकेट दिनेश यादव ने बताया कि आयोग के आदेश से ऐसे किसानों को न्याया मिला है जो कि अपने पशु धन का बीमा तो कराते हैं, मगर उन्हें पशु की मृत्यु होने पर बीमा राशि नहीं दी जाती है। इसके अलावा आयोग द्वारा दिए गए आदेश के बाद बैतूल तहसील के ग्राम खेडला के किसान सदाशिव उर्फ सुद्दू टिकमे आ. किशनलाल टिकमे को आदेश के अनुसार 1 लाख 15 हजार 391 रूपये फसल बीमा राशि के सहकारी बैंक बैतूल द्वारा जमा किये गये है। ग्राम सेलगांव के गुलाबराव पिता नन्हू पोटफोड़े को सहकारी बैंक बडोरा बैतूल द्वारा 65 हजार 845 रूपये फसल बीमा राशि मिलेगी तथा प्रभातपट्टन तहसील के ग्राम सावंगी के किसान नाथूराम पिता गणपति भोपते को 19 हजार 580 रूपये फसल बीमा राशि, मानसिक संत्रास व वाद व्यय सहित मिलेगी। इन किसानों को 6 प्रतिशत वार्षिक ब्याज भी मिलेगा।

पेंशनर्स दंपत्ति ने लिया देहदान का संकल्प

बैतूल। सेवाकार्य की कोई उम्र नहीं होती है बस जज्बा होना चाहिए। पेंशनर्स ने बता दिया की समाज के प्रति सेवा की भावना आज भी युवाओं से कम नहीं है। मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पेन्शन एसोसिएशन के प्रांतीय कार्यकारणी सदस्य व श्रमिक नेता एएन सिंह एवं उनकी पत्नी श्रीमती

सावित्री सिंह द्वारा शुक्रवार को देहदान का संकल्प लिया। अपने मित्रों के साथ सिटी हॉस्पिटल बैतूल में रेडक्रास सोसाइटीज के डॉ.अरूण जयसिंगपुरे व डॉ.सोनवणे को अपने देहदान के निर्धारित दस्तावेज दिए। डाक्टर द्वारा उनके इस सराहनीय कार्य की सराहना की गई तथा आगामी कार्यवाही से अवगत कराया। इस अवसर पर डीके तिवारी, आरडी यादव, एसआर बड़ोदे, एमएम अंसारी, डीडी देशमुख ललित सिसोदिया, अरुण देशपांडे, राजेश शर्मा, प्रेमलाल पवार, पृथ्वी सिंह आदि एसोसिएशन के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद थे।

रासेयो स्वयंसेवक ने किया पौधरोपण

बैतूल। विद्यार्थी को अपने स्कूल या कॉलेज के परिसर में एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। जिससे वर्षो बाद भी उसके अध्ययन की स्मृति बनी रहे। जेएच कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक ऋषक पारिसे ने जन्मदिन के अवसर पर कॉलेज में स्वयंसवको के साथ अपने जन्मदिवस के अवसर कालेज परिसर में पौधरोपण किया गया। पौधारोपण कार्यक्रम प्राचार्या डॉ.विजेता चौबे के संरक्षण में रासेयो जिला संगठक डॉ.सुखदेव डोंगरे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गोपाल प्रसाद साहू, डॉ शीतल खरे की उपस्थिति में हुआ। इस मौके पर डॉ.विजेता चौबे ने कहा की पौधारोपण

कर वह उन्हें वृक्ष बनाने का संकल्प लें और उसे पूर्ण करें। डॉ.गोपाल प्रसाद साहू ने कहा की ऋषक ने अपने जन्मदिन के अवसर वर पौधरोपण कर एक अच्छी पहल की है। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक अजली नागोरे, सुरभि जैन, आयुष घिडोडे, इस्तयाक अली, अर्पण पवार, आयुष नागोरे रंजीत कायदे, रिया खातरकर, प्राची जैन, फूलमती यादव आदि का सराहनीय योगदान रहा।

वेतन वृद्धि को अप्रैल माह के वेतन में जोड़कर भुगतान करने की मांग

भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व में दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। नगर पालिका बैतूल में कार्यरत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने श्रम विभाग द्वारा जारी किए गए वेतन वृद्धि कलेक्टर दर को अप्रैल माह के वेतन में जोडक़र भुगतान करने की मांग की है। भारतीय मजदूर संघ के जिला सहमंत्री हरिओम कुशवाहा के नेतृत्व में कर्मचारियों ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर जल्दी से इस मामले का समाधान करने का आग्रह किया।

आंधी-तूफान के साथ बारिश से मंडी में बरसी आफत, अनाज हुआ गीला

बैतूल। मौसम का मिजाज दुरूस्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पिछले कई दिनों से बेमौसम बारिश और आंधी-तूफान जमकर तबाही मचा रहे हैं। शुक्रवार को भी जिले में आंधी-तूफान और वज्रपात के साथ बारिश हुई। जिसके कारण मंडी में रखा अनाज भीग गया और खासे परेशान होते दिखे। गौरतलब है कि शुक्रवार की शाम जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में जमकर बारिश हुई। इससे बडोरा मंडी में रखा किसानों का अनाज पानी में पूरी तरह से गीला हो गया। इससे किसानों को खासा नुकसान उठाना पड़ेगा। बारिश इतनी तेजी से आई कि किसानों को संभलने का मौका तक नहीं मिला।

शादियों में खलल डाल रही-बीते कई दिनों से प्रदेश भर में मौसम बिगड़ा है। इन दिनों शादियों का सीजन चल रहा है।

बारिश और आंधी-तूफान से बैतूल जिले सहित अनेक स्थानों पर कहीं शादी के टेंट उड़ रहे हैं तो कहीं सारी तैयारियों पर पानी फिर रहा है।

कौशल शिविर में छात्राओं ने जाना विज्ञान का महत्व

64 कलाओं पर आधारित कौशल शिविर में छात्राओं ने किए विज्ञान के प्रयोग

बैतूल। ई.एफ.ए.शासकीय कन्या उ.मा.विद्यालय बैतूल गंज बैतूल में 25 अप्रैल को 64 कलाओं पर आधारित कौशल शिविर में छात्राओं ने विज्ञान के प्रयोग कर विज्ञान के महत्व को समझा। कौशल शिविर के प्रभारी शिक्षक महेश गुंजेले ने बताया कि विद्यालय में प्राचार्य ललितलाल लिल्होरे के मार्गदर्शन में 64 कलाओं पर आधारित कौशल शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में 100 से अधिक छात्राएं भाग ले रही है। 25 अप्रैल को छात्राओं को विज्ञान के प्रयोग कराए गए। विज्ञान के शिक्षक जी.आर.देशमुख, रीना श्रीवास्तव ने रसायन के प्रयोग, रेखा बारपेटे, विरेन्द्र झरबड़े ने भौतिकी, के.जी.बरमासे एवं कामायनी त्रिवेद्वी द्वारा विज्ञान के प्रयोग की जानकारी दी। शिविर में मीरा कापसे, वन्दना बेठे ने भी सहयोग किया। इस अवसर पर प्राचार्य ललितलाल लिल्होरे ने कहा कि प्रायोगिक ज्ञान एक शिक्षा प्रक्रिया है, जिसमें अनुभव के माध्यम से शिक्षित किया जाता है, परिभाषित किया जाता है। विज्ञान के इन अनेक आविष्कारों ने मानव जीवन को पहले से अधिक सरल बना दिया है। विज्ञान ने वायुयान, जलयान, राकेट, काल व ट्रेन आदि यातायात के साधनों का आविष्कार करके वर्षों की यात्रा को दिनों में और दिनों की यात्रा घंटों में संभव कर दी है। तार, टेलीफोन और बेतार के तार द्वारा संवाद भेजने में बड़ी सुविधा हो गई हैं, देश में विकास विज्ञान की देन है।

दिव्य ज्योति स्कूल के विद्यार्थियों ने किया गौरवान्वित

शुभम बनखेड़े ने प्राप्त किए 92.2 प्रतिशत अंक

बैतूल। दिव्य ज्योति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरडी में हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी परीक्षाओं के परिणामों में स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। कक्षा 12वीं के परीक्षा में प्रथम स्थान पर शुभम सुभाष बनखेडे ने 92.2 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, जबकि हाई स्कूल परीक्षा में युशिका दिलीप मालवीय ने 76.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

इस सफलता ने स्कूल को गौरवान्वित किया है। स्कूल प्रबंधन से मिली जानकारी के अनुसार कक्षा 12वीं से प्रथम स्थान शुभम सुभाष बनखेडे काजली द्वारा 92.2 प्रतिशत लाए गए, साथ ही द्वितीय हर्षित सुरेश देशमुख सिरडी 77.4 प्रतिशत, तृतीय मयूर आकाश राव लोखंडे 70 प्रतिशत, हाई स्कूल परीक्षा परिणाम में प्रथम स्थान युशिका दिलीप मालवीय सहनगांव 76.8 प्रतिशत, द्वितीय आकाश संतोष बिहारे सिरडी 76.4 प्रतिशत, तृतीय नंदनी विनायक साईखेड़ाखुर्द 74 प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण हुए है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने इस उत्कृष्टता का स्वागत किया और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया है कि वे अपने उच्च शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। उल्लेखनीय है कि विद्यार्थियों के इन प्रशंसनीय परिणामों के पीछे उनकी मेहनत, उत्साह और शिक्षकों की मेहनत और मार्गदर्शन का बड़ा हाथ है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने इस सफलता को हासिल करने पर विद्यार्थियों को बधाई दी और उन्हें आगे भी अधिक मेहनत करने का प्रोत्साहन दिया है, ताकि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

रेलवे नागपुर मंडल 25 स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं के लिए शुरू करेगा डिजिटल एक्सेस मैप सुविधा

बैतूल। भारतीय रेल नेटवर्क में एक महत्वपूर्ण केंद्र, नागपुर रेलवे स्टेशन ने रेलवे स्टेशनों पर यात्री अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव लाते हुए एक अभिनव डिजिटल एक्सेस मैप का अनावरण किया है। मध्य रेल के नागपुर मंडल द्वारा विकसित, इस पहल का उद्देश्य मंडल के 25 प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधा को बढ़ाना है।डिजिटल एक्सेस मैप एक अग्रणी चित्रात्मक प्रतिनिधित्व है जो पूरे स्टेशन परिसर में विभिन्न यात्री सुविधाओं के स्थानों को दर्शाता है। इसका सहज डिज़ाइन यात्रियों को प्रतीक्षालय (आरक्षित और अनारक्षित दोनों), दिव्यांग (विशेष रूप से विकलांग) टिकट काउंटर, शौचालय, पानी के नल और कूलर, लिफ्ट, फुट ओवर ब्रिज, प्रवेश और निकास बिंदु, आरपीएफ थाना (रेलवे सुरक्षा बल स्टेशन), और भी बहुत कुछ जैसी सुविधाओं पर व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करता है। रात में भी स्पष्ट दृश्यता सक्षम करने के लिए सेटअप बैक-लिट है।

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया यह डिजिटल मानचित्र रेलवे बुनियादी ढांचे को कुशलतापूर्वक नेविगेट करने के लिए एक अनिवार्य उपकरण के रूप में कार्य करता है। विभिन्न प्लेटफार्मों पर और कॉन्कोर्स/स्टेशन क्षेत्र के भीतर उपलब्ध सुविधाओं के बारे में स्पष्ट दृश्य संकेत और सटीक जानकारी प्रदान करके, यह यात्रियों को सूचित निर्णय लेने और उन सुविधाओं तक तेजी से पहुंचने में सक्षम बनाता है जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है।

वर्तमान में नागपुर मंडल के 25 स्टेशनों पर डिजिटल एक्सेस मैप को बिना किसी देरी के शेष स्टेशनों पर लागू करने की तैयारी है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि डिवीजन के प्रत्येक यात्री को इस अभिनव समाधान से लाभ मिले। जिन स्टेशनों पर डिजिटल एक्सेस मैप वर्तमान में चालू है उनमें नागपुर, वर्धा सेवाग्राम, चंद्रपुर, बल्लारशाह, वरोरा, हिंगनघाट, भनादक, काटोल, नरखेर, पुलगांव, धामनगांव, चंदूर, पांढुर्ना, मुलताई, आमला और बैतूल शामिल हैं।

कौड़िया गांव के शासकीय स्कूल के बच्चों ने किया नाम रोशन

छात्राओं ने मारी बाजी, छात्र भी 10वीं के रिजल्ट में रहे अव्वल

बैतूल। शिक्षकों के अथक प्रयासों से और लगातार बेहतर पढ़ाई के कारण अब ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय स्कूल भी बेहतर रिजल्ट देने में अपना नाम रोशन कर रहे हैं। हाल ही में जारी हुए एमपी बोर्ड 10वीं के रिजल्ट में भैंसदेही ब्लॉक के शासकीय हाईस्कूल कौडिया के बच्चों ने उम्दा प्रदर्शन किया है। कौडिया गांव शासकीय हाईस्कूल के 54 बच्चे इस साल 10वीं बोर्ड की परीक्षा में बैठे थे। जिसमें से 40 बच्चे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं जबकि 12 बच्चों ने द्वितीय श्रेणी में परीक्षा पास की है। कुल मिलाकर स्कूल का रिजल्ट

बेहतर रहा है। स्कूल के शिक्षकगणों सहित बच्चों की लगन और मेहनत से ये सफलता स्कूल ने हासिल की है। सभी बच्चों को शिक्षक राजेश पंथी, दिनेश कुमार छितकारे, श्यामलाल उईके, मनीष कुमार चंदेल, रमेश सलामे, दसन मर्सकोले ने शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कमाना की है।

सभी बच्चों को उनके पालकों एवं ग्रामीणजनों ने बधाई दी है। बच्चों का नाम निशा झारखंडे, दीपिका मेश्राम, अंशिका इरपाचे, मुन्नी सलामे, एकराज हरसुले आदि प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण कर स्कूल का नाम रोशन किया।

सीएम राइज विद्यालय में प्रवेश हेतु आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 29 अप्रैल, लॉटरी प्रक्रिया 4 मई को पूर्ण होगी

बैतूल। सी.एम. राइज शा.कृषि उ.मा.वि. बैतूल बाजार में कक्षा 6वीं, 7वीं, 9वीं एवं 11वीं हेतु आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि सोमवार 29 अप्रैल 2024 को शाम 5 बजे तक है। उक्त कक्षाओं में आवेदन जमा करने हेतु उत्तीर्ण अंकसूची की छायाप्रति/उत्तीर्ण का प्रमाण पत्र/इंटरनेट की छायाप्रति के साथ शाला में निर्धारित काउंटर पर 29 अप्रैल 2024 को शाम 5 बजे तक जमा किए जाएंगे तथा प्रवेश प्रक्रिया हेतु शनिवार 4 मई 2024 को दोपहर 12 बजे से लॉटरी प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी। प्राचार्य द्वारा समस्त पालकों/विद्यार्थियों से निर्धारित समय में आवेदन जमा करने की अपील की है।

सेहत

बाल मुकुन्द ओझा

लेखक पत्रकार हैं।

रसोई तक पहुंचा मिलावट का जहर

खाने-पीने की चीजों में हो रही मिलावट से अब मसाले भी अछूते नहीं रहे हैं। सब्जियों को स्वादिष्ट बनाने के लिए ब्रांडेड से लेकर खुदरा बिकने वाले मसाले में धड़ल्ले से मिलावट का खेल चल रहा है। आम आदमी महंगाई के साथ खाद्य पदार्थों में हो रही मिलावट खोरी से खासा परेशान रहता है। हमारे बीच यह धारणा पुख्ता बनती जा रही है कि बाजार में मिलने वाली हर चीज में कुछ न कुछ मिलावट जरूर है। लोगों की यह चिंता बेबुनियाद नहीं है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। खाने पीने के पदार्थों में मिलावट कोई नयी समस्या नहीं है। मिलावट और खराब उत्पाद बेचे जाने की खबरें आम हो चुकी हैं। साल-दर-साल इसका दायरा व्यापक होता जा रहा है। देश की दो नामी कंपनियों के मसालों में मिलावट की खबर से हर देशवासी हैरान और परेशान है। सबसे ज्यादा मिलावट मसालों में हो रही है। काली मिर्च में पपीते का बीज, लाल मिर्च में रंग वाला पाउडर और ईंट पीस कर मिला देते हैं। धनिया पाउडर में तरह तरह की मिलावट करते हैं। हल्दी में पीला रंग मिला देते हैं और जीरा में झाड़ू वाला जीरा मिला देते हैं।

हांगकांग और सिंगापुर में खाद्य नियामकों ने भारत के दो प्रमुख मसाला ब्रांड एमडीएच और एवरेस्ट के कुछ उत्पादों में कैंसर पैदा करने वाले तत्व को लाल झंडी दिखाई है और उन्हें बजार से वापस करने के आदेश दिए हैं। इस खबर से भारतीय बाजार में सनसनी फेल गई है। सिंगापुर में मसालों पर प्रतिबंध लगने के बाद भारत सरकार ने दोनों कपनियों के मसालों की गुणवत्ता की जांच के आदेश दिए हैं। इन उत्पादों में, एमडीएच के मद्रास करी पाउडर (मद्रास करी के लिए मसाला मिश्रण), एवरेस्ट फिश करी मसाला, एमडीएच सांभर मसाला मिश्रित मसाला पाउडर और एमडीएच करी पाउडर मिश्रित मसाला पाउडर शामिल हैं। केंद्र सरकार ने देश के सभी फूड कमिशनर्स को अलर्ट कर दिया है। इसी के साथ मसालों के नमूने एकत्र करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। आदेश में कहा गया है कि तीन से चार दिनों में देश की सभी मसाला निर्माता इकाइयों से नमूने एकत्र किए जाएंगे। सिर्फ एमडीएच और एवरेस्ट ही नहीं, सभी मसाला निर्माता कंपनियों से नमूने लिए जाएंगे। लैब से लगभग 20 दिनों में रिपोर्ट आएगी।

मिलावट का अर्थ है महँगी चीजों में सस्ती चीज का मिलावट। मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे-समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ भी किया जाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से प्रतिवर्ष हजारों लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर जीवन से हाथ धो बैठते हैं। मिलावट का धंधा हर तरफ देखने को मिल रहा है। दूध बेचने और मिलावट करने वाले से लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ने मिलावट के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। संपूर्ण देश में मिलावटी खाद्य-पदार्थों की भरमार हो गई है । आजकल नकली दूध, नकली घी, नकली तेल, नकली चायपत्ती आदि सब कुछ धड़ल्ले से बिक रहा है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचे वालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड़ जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं ।

सामान्य तौर पर एक परिवार अपनी आमदनी का लगभग 60 फीसदी भाग खाद्य पदार्थों पर खर्च करता है। खाद्य अपमिश्रण से अंधापन, लकवा तथा टयूमर जैसी खतरनाक बीमारियाँ हो सकती हैं। सामान्यत रोजमर्रा जिन्दगी में उपभोग करने वाले खाद्य पदार्थों जैसे दूध, छाछ, शहद, हल्दी, मिर्च, पाउडर, धनिया, घीं, खाद्य तेल, चाय-कॉफी, मसाले, मावा, आटा आदि में मिलावट की सम्भावना अधिक है। मिलावट एक संगीन अपराध है। मिलावट पर काबू नहीं पाया गया तो यह ऐसा रोग बनता जा रहा कि समाज को ही निगल जाएगा। मिलावट के आतंक को रोकने के लिए सरकार को जन भागीदारी से सख्त कदम उठाने होंगे।

निर्वाचन प्रशिक्षण में अनुपस्थित रहने पर 16 कर्मचारियों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी, 3 दिन में देना होगा जवाब

धार। मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं नोडल अधिकारी (मेन पॉवर मेनेजमेंट) जिला पंचायत सविता झानिया ने लोकसभा आम निर्वाचन-2024 अंतर्गत विधानसभा क्षेत्रों में पीओ एवं पी-1 का कर्मचारियों को निर्वाचन प्रशिक्षण का दायित्व सौंपा गया था। जिसका प्रशिक्षण गत दिवस विधानसभा मुख्यालयों पर आयोजित किया गया। निर्वाचन संबंधी महत्वपूर्ण प्रशिक्षण में जिले के 16 कर्मचारियों को अनुपस्थित रहने पर उन्हें कारण बताओ सूचना पत्र जारी किये गये है। इनमें शासकीय कन्या हाईस्कूल टाण्डा के सहायक शिक्षक थावरिया बामनिया, एकीकृत बाल विकास परियोजना बाग के सहायक ग्रेड-2 कमल कुमार शिन्दे, शासकीय कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय लोहारी के माध्यमिक शिक्षक भीमसिंह सोलंकी, शासकीय हाईस्कूल निम्बोल निसरपुर के अध्यापक दिनेश मोरे, शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय घटबोर के माध्यमिक शिक्षक दिलीपसिंह मण्डलोई, नर्मदा विकास संबंध मनावर के उपयंत्री गोविंदसिंह चौहान, शासकीय बालक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय सुन्द्रैल की व्याख्याता ममता चौरसिया, शासकीय कन्या उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय धामनोद की व्याख्याता स्वाति आचार्य, ग्रामीण उद्यान विस्तार अधिकारी उप संचालक उद्यान धार देवेन्द्र वर्मा, बदनावर के काछीबडोदा की शिक्षक उर्मिला जमरा, जवाहर नवोदय विद्यालय मुलथान की पीईटी रजनी मीणा, सीएम राईज नागदा की शिक्षक संगीता बघेल, शासकीय कन्या हाईस्कूल सागौर के माध्यमिक शिक्षक अनुभा जैन, शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय देदला के माध्यमिक शिक्षक्ष प्रवीण शर्मा, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा धार के मानचित्रकार जीडी कौशल तथा बालक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय पीथमपुर के प्रधानपाठक अवधराज यादव शामिल है। उक्त कर्मचारियों को आयोजित प्रशिक्षण में अपनी अनुपस्थिति के संबंध में अपना प्रतिउत्तर कार्यालय प्रमुख के माध्यम से 3 दिवस के अंदर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये है।

प्रतिभागियों ने मतदान को प्रेरित करने का संदेश देने वाले सुंदर चित्र पोस्टर पर उकेरे,चित्रकला के माध्यम से दिया मतदान का संदेश

धार। लोकसभा चुनाव में मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के लिए स्वीप अंतर्गत जिला स्तरीय पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। मतदाता जागरूकता पर आधारित इस पोस्टर प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में जिले के युवक-युवतियों ने सहभागिता की और निष्पक्ष, निर्भीक मतदान को प्रेरित करने का संदेश देने वाले सुंदर चित्र पोस्टर पर उकेरे। कन्या शिक्षा परिसर में आयोजित इस प्रतियोगिता में सम्मिलित सभी पोस्टर्स को प्रदर्शनी के रूप में प्रदर्शित किया गया। सीईओ जिला पंचायत सविता झानिया, सीजेएम संदीप सिंह, सहायक कलेक्टर विशाल धाकड़, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग बीके शुक्ला सहित जिले के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया और प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

आओ मिलकर अलख जगाएं,शत-प्रतिशत मतदान कराएं

मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से ग्राम लुन्हेरा में निकाली गई मतदाता जागरूकता रैली

निखिल ग्वाल (सुबह सवेरे) नालछा। लोकतंत्र के महापर्व पर मतदाताओं को मतदान का महत्व बताने एवं मतदाताओं को मतदान के प्रति प्रेरित एवं जागरूक करने के उद्देश्य से प्रशासन कई प्रकार के अभियान चलाकर मतदाताओं को जागरूक कर रहा है.ताकि लोकतंत्र के महापर्व पर अधिक से अधिक मतदान करवाया जा सके. इसी कड़ी में नालछा के समीपस्थ ग्राम लुन्हेरा में शुक्रवार को शासकीय विभागों के कर्मचारियों द्वारा मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया. जिसमे कर्मचारीगण अपने हाथो में मतदान के प्रति जागरूक करने वाले स्लोगन जेसे ÷आओं मिलकर

अलख जगाए,शत प्रतिशत मतदान कराए.. ई.वी.एम. से देंगे वोट,कहते है डंके की चोट...सहित अन्य स्लोगन लिखी हुई तख्तियां लेकर मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान करने हेतु प्रेरित करते नजर आए. इस दौरान हाई स्कूल लुन्हेरा, मा.वि.लुन्हेरा, प्रा.वि.महतीपुरा, प्रा. वि.पटल्यापुरा के शिक्षक व शिक्षिका प्रमुख रूप में रैली में शामिल हुए. क्षेत्र की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका,स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारी,पंचायत विभाग के कर्मचारी,पंचायत सचिव व पेसा मोबेलाइजर भी मतदाता जागरूकता रैली में शामिल हुए.

भाजपा लोकसभा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर आज सरदारपुर विधानसभा क्षेत्र में करेंगी जनसंपर्क

धार। भाजपा की धार - महू लोकसभा प्रत्याशी पूर्व सांसद सावित्री ठाकुर अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत 27 अप्रैल शनिवार को सरदारपुर विधानसभा क्षेत्र में पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष भाजपा नेता के साथ तूफानी जनसंपर्क कर 13 मई को होने जा रहे चुनाव के लिए संपर्क से समर्थन मांगकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार सरकार बनाने के लिए अपील करेगी।

जानकारी देते हुए भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि सावित्री ठाकुर शनिवार 27 अप्रैल को सरदारपुर विधानसभा के राजोद मंडल के विभिन्न ग्रामों में जनसंपर्क

भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील करेंगी। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि भाजपा प्रत्याशी का तय कार्यक्रम अनुसार शनिवार को सुबह सरदारपुर विधानसभा के ग्राम निपवाली में सुबह 10:00 बजे राजोद नगर में, 10:30 बजे साजोद, 11:30 बजे गोंडीखेड़ा गांव में, दोपहर 12 बजे बसलाई, 12:30 बजे अकोलिया 1:00 बजे देवीखेड़ा 1:30 बजे संदला 2:00 बजे सवला बजे लाबरिया 3:30 बजे सिंदुरिया 4:30 बजे पटोलिया 5:00 बजे बरखेड़ा 5:30 पर बरमखेड़ी शाम 6:00 बजे खुटपला 6:30 बजे चंदोडीया 7:00 बजे बरमंडल 7:30 पर बोडिया में रात्री 8 बजे जनसंपर्क करेंगे।

नगर पालिका के वो कर्मचारी जो वर्षों से अधिकारी की तरह आते जाते हैं

आखिर क्यों नहीं हो पाती कार्यवाही

आमला। अगर कोई आपसे यह कहे कि नगरपालिका में कुछ कर्मचारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी से भी बढ़कर हैं तो किसी को भी हंसी आ सकती है किंतु यह बिल्कुल सच है कि नगर पालिका में कुछ कर्मचारियों के आने-जाने का वक्त और काम का तरीका उन्हें किसी भी अधिकारी से ऊपर रखता है नगर पालिका के सूत्र बताते हैं कि ऐसे कर्मचारी जो किसी अधिकारी की तरह अपना रुतबा रखते हैं यह व्यवस्था उन्होंने बीते कई वर्षों से कायम रखी है किंतु किसी भी अधिकारी की इतनी हिम्मत नहीं है कि इस अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सके, इनके बारे में कहा जाता है कि नगर पालिका के यें रसूखदार कर्मचारी प्रतिदिन ही दोपहर एक बजे ऑफिस आते हैं, और शाम चार बजे वापस भी चले जाते हैं, अब कर्मचारियों की कमी से जूझ रही नगरपालिका को ऐसे रसूखदार कर्मचारियों की व्यवस्था से आम जनता और नगर पालिका को भी कितना नुकसान उठाना पड़ रहा होगा अंदाजा लगाया जा सकता है हालांकि अब नगर पालिका अधिकारी इस बारे में कार्यवाही की बात कह रहे हैं।

सीएम राइज आमला दसवीं 63% एवं बारहवीं 85% रहा परिणाम

आमला। माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा सत्र 2023-24 के दसवीं एवं बारहवीं के परीक्षा परिणाम घोषित कर दिये हैं, इस सत्र में सीएम राइज आमला का परीक्षा परिणाम कक्षा दसवीं 63% एवं बारहवीं का 85% रहा 7 गत वर्ष की तुलना मे दसवीं का परिणाम में 9% की वृद्धि हुई, जबकि बारहवीं का परिणाम 29% अधिक रहा कक्षा दसवीं में कुल 144 छात्र सम्मिलित हुये जिनमे से 60 प्रथम श्रेणी 30 द्वितीय श्रेणी एवं 01 विद्यार्थी तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए. 23 विद्यार्थी अनुत्तीर्ण, एवं 30 को पूरक प्राप्त हुई 7 कक्षा बारहवीं में 121 विद्यार्थी सम्मिलित हुए जिसमें 75 प्रथम श्रेणी, 28 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए जबकि 7 विद्यार्थी अनुत्तीर्ण एवं 11 को पूरक प्राप्त हुई. कक्षा दसवीं में कशिश पिता राजेश ठाकरे 91% अंकों के साथ टॉपर रही जबकि कक्षा बारहवीं में निहारिका पिता संजय उभेकर गणित संकाय टॉपर रही. संस्था के प्राचार्य डॉ राजेश कुमार खैरवाल, प्रदीप नागले, धनराज कहार, सतीश साहू, गुणवंत देशमुख, मनोज बुआडे एवं समस्त शिक्षक द्वारा बधाई दी गई।

वाहन चौकिंग के दौरान किसी व्यक्ति के पास 50 हजार रूपये से अधिक की नगदी अथवा 10 हजार रूपये मूल्य से अधिक की उपहार वस्तुएं पाये जाने पर जब्त होगी

धार। लोकसभा आम निर्वाचन-2024 की आदर्श आचार संहिता के दौरान निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में निर्वाचन को प्रभावित करने वाली गतिविधियों पर नियंत्रण रखने व अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए विधानसभावार स्थैतिक निगरानी दलो (एस एस टी) का गठन किया गया है। जिला कोषालय अधिकारी एवं नोडल अधिकारी व्यय अनुवीक्षण टीम मानसिंह डामोर ने बताया कि इन दलो द्वारा सडक मार्गो से गुजरने वाले समस्त वाहनो की चौकिंग की जावेगी। वाहन चौकिंग के दौरान अभ्यर्थी, अभिकर्ता, अन्य किसी व्यक्ति के पास राशि 50 हजार रूपये से अधिक की नगदी अथवा 10 हजार रूपये मूल्य से अधिक की ऐसी उपहार वस्तुएं जिनका इस्तेमाल मतदाताओ को प्रलोभन दिये जाने हेतु संभावित है तथा वाहनों में कोई ड्रग्स, शराब, हथियार, गोला बारूद एवं वाहन में अवैध पोस्टर, बैनर, पेम्पलेट्स अथवा अन्य सामग्री (जिन पर मुद्रक एवं प्रकाशक का नाम अंकित नहीं है) को जब्त किया जावेगा। जांच किये जाने की संपूर्ण प्रक्रिया की विडियोग्राफी की जावेगी।

उन्होंने बताया कि किसी वाहन में 10 लाख रूपये से अधिक की नगदी प्राप्त होने पर आयकर विभाग के अधिकारियों को सूचित कर आयकर अधिनियम की धाराओं के तहत कार्यवाही की जावेगी। जब्त बहुमूल्य सामग्री, राशि की पावती स्थैतिक निगरानी दल द्वारा प्रदान की जावेगी। जब्त बहुमूल्य सामग्री, राशि निकट के थाने अथवा कोषागार में जमा की जावेगी। जब्त बहुमूल्य सामग्री, नगदी को रिलीज किये जाने हेतु जिला स्तरीय समिति गठित है जिसके समक्ष जप्ती के विरूध्द अपील की जाने पर समिति दस्तावेजों के परीक्षण उपरांत नकदी, सामग्री को रिलीज करने की कार्यवाही करेगी। जब्त की गई बहुमूल्य वस्तुओं से संबंधित मामलो का निराकरण मतदान की तारीख के पश्चात 7 दिवस के अंदर किया जावेगा, बशर्ते की कोई प्राथमिकी शिकायत दर्ज न की गई हो।

रहस्यमयी ढंग से गायब हो रहा नगर पालिका का लाखों का स्क्रैप

आमला। अगर कोई आपसे कहे की शहर के किसी शासकीय विभाग में रखा हुआ, सामान रहस्यमई ढंग से गायब हो रहा है,तो आपको हंसी आ सकती हैं, किन्तु नगर पालिका में कुछ ऐसा ही हो रहा है, दरअसल बीते कुछ महीनों पहले तक शहर के वार्ड क्रमांक 8 स्थित नगर पालिका के संपवेल पर लाखों रुपए का स्क्रैप पड़ा हुआ था, किंतु जिम्मेदारों की लापरवाही से अब लाखों रुपए का स्क्रैप लगभग 50 हजार का ही रह गया है. बीते कुछ वर्षों से पैसे पैसे को मोहताज और तंगहाली का सामना कर रही आमला नगर पालिका पर खुला भ्रष्टाचार और मनमानी के दर्जनों आरोप लगते रहे हैं, इसके बाद भी नगर पालिका को सवारने का काम जिन कंधों पर है वह जिम्मेदार ही ध्यान नहीं दे रहे हैं कहते हैं कि जिस बाग का कोई माली नहीं होता है उसे कौन खिला सकता हैं, कुछ ऐसा ही इस समय आमला नगर पालिका का हाल हो चुका है, बताया जाता है कि नगर पालिका के जिम्मेदारों की अनदेखी और लापरवाही शासन के खजाने को बड़ा नुकसान पहुंचा रही है, जिसमें बीते एक-दो वर्षों के दौरान ही नगर पालिका का

लाखों का स्क्रैप बड़े ही रहस्यमय ढंग से गायब हो गया है, अब समय-समय पर नगर पालिका द्वारा इसका निरीक्षण और नीलामी की प्रक्रिया को क्यों नहीं किया गया, इसका जवाब किसी के पास नहीं है, यहां केवल नगर पालिका के स्क्रैप का मामला ही नहीं है बल्कि नगर पालिका के के अधीनस्थ शहर के विभिन्न इलाकों की बेशकीमती व्यावसायिक भूमि भी कथित तौर पर मिली भगत से भूमाफियाओं के हवाले कर दी गई है, ऐसे में नगर पालिका अगर अपनी तंगहाली का रोना रो रही है तो उसकी जिम्मेदार भी खुद नगर पालिका ही है।

पिछली सरकार में बने लाखों के शेड भी गायब- बताया गया है कि नगर पालिका में तत्कालीन कांग्रेस सरकार द्वारा लाखों रुपए के टीन शेड बनाकर बेरोजगारों को देने की योजना बनाई गई थी, अब लाखों रुपए के यें बनाए गए शेड बेरोजगारों को तो नहीं मिल पाए, किंतु अब यें शेड कहां पर है किसी को कुछ पता नहीं है, इसी दौरान लाखों रुपए लागत की खरीदी गई हाथ कचरा गाड़ी और इनका स्क्रैप भी अब देखने को भी नहीं मिलेगा, तो वही साल दर साल नगर पालिका से निकलने वाले लाखों के स्क्रेप की भी नीलामी नहीं किए जाने से सरकार को लाखों का चूना लग चुका है।

कर्मचारी निर्वाचन में शहर भगवान भरोसे- इधर बीते एक माह से भी ज्यादा समय से शहर के सभी वार्डों में सफाई बिजली की व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई है, हालांकि बीते एक सालों से भी हालात कुछ ज्यादा अच्छे नहीं है, इसमें भी अब नगर पालिका के ज्यादातर कर्मचारी निर्वाचन की सेवा में लगे होने से वार्डों में सफाई और स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था बुरी तरह बिगड़ गई है, जिससे लोगों की शिकायतें बढ़ रही है, इस बारे में जब लोगों की शिकायत के आधार पर हमनें नगर पालिका के सफाई और बिजली विभाग से चर्चा की तो इन्होंने बताया कि इस समय ज्यादातर कर्मचारी निर्वाचन में लगे हुए हैं यानी शहर भगवान भरोसे छोड़ दिया गया है।

सावित्री ठाकुर ने 12वीं की परीक्षा में प्रदेश में 9वां स्थान प्राप्त करने पर दिशा पाटीदार के निवास पहुंचकर सम्मान किया

धार। ज़िले के बदनावर क्षेत्र के गांव कंडारिया की बेटी दिशा ललित पाटीदार ने कक्षा 12वीं में जीव विज्ञान समूह में मध्यप्रदेश की मैरिट लिस्ट में 9वें स्थान प्राप्त कर धार जिले को गौरवान्वित किया । दिशा पाटीदार को शुभकामना देने के लिए बालिका के गृह ग्राम कंडारिया पहुंचकर धार महू लोकसभा भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने दिशा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी। इस दौरान भाजपा पूर्व मण्डल अध्यक्ष राजेश वर्मा, राजेश चंद्रवंशी, अशोक चौधरी फुलसिह वर्मा, राकेश पवार,राहुल परमार, चंदन बराडिया उपस्थित रहे।

म.प्र. में फिर आंधी-बारिश : मंदसौर, छिंदवाड़ा समेत कई जिलों में गिरा पानी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में एक बार फिर मौसम बदल गया है। शुक्रवार को कई जिलों में तेज आंधी और बारिश हुई। मंदसौर, छिंदवाड़ा, रतलाम, झाबुआ, धार, आगर मालवा और राजगढ़ में बारिश हुई। राजगढ़ के खिलचीपुर में तेज हवा के साथ बारिश हुई। जिससे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सभा का टेंट उड़ गया।

मौसम विभाग का कहना है कि अगले 24 घंटे में भोपाल, शाजापुर, बड़वानी, इंदौर और उज्जैन सहित कई जिलों में बारिश हो सकती है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, अप्रैल के आखिरी सप्ताह भी बारिश-आंधी का दौर रहेगा।

वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन की वजह से पिछले 6 दिन से अलग-अलग क्षेत्र में बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने 26 और 27 अप्रैल के लिए ऑरेंज और यलो अलर्ट जारी किया है। ऑरेंज अलर्ट वाले जिलों में ओले भी गिर सकते हैं। शुक्रवार को उत्तर और पश्चिमी हिस्से के

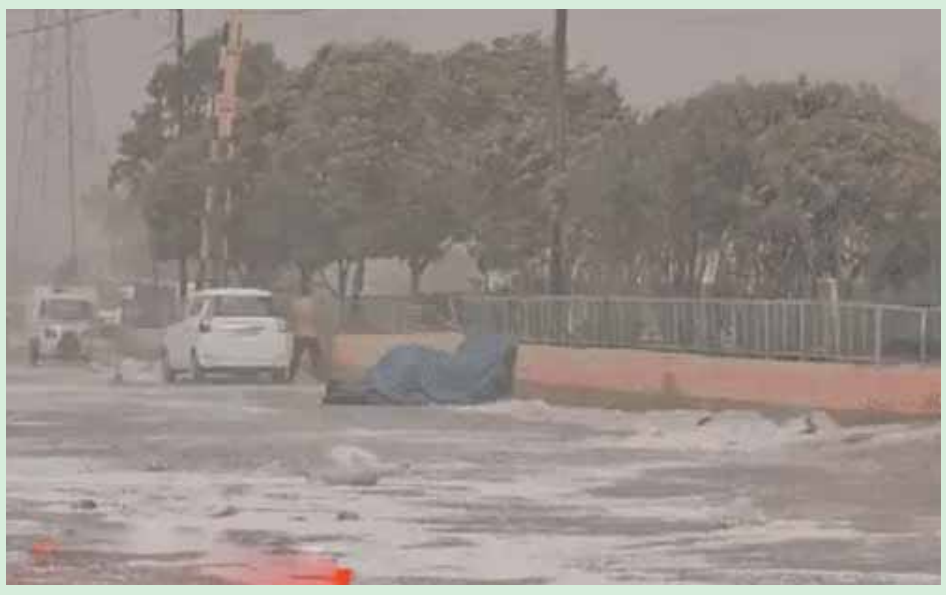

ग्वालियर, नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा और सागर में ओले-बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

कब-कहां बारिश के आसार

27 अप्रैल- शाजापुर, आगर-मालवा, राजगढ़, गुना, अशोकनगर, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट और मंडला जिलों में ऑरेंज अलर्ट है। वहीं, भोपाल, इंदौर, धार, उज्जैन, खरगोन, बुरहानपुर, खंडवा, हरदा, देवास, सीहोर, रायसेन, विदिशा, नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, जबलपुर, कटनी, उमरिया, मैहर, शहडोल, अनूपपुर, डिंडोरी में यलो अलर्ट है।

लगातार 6 दिन तक बारिश

अप्रैल में बारिश के कई रिकॉर्ड टूटे। भोपाल में करीब पौने 2 इंच बारिश हो गई। वहीं, अप्रैल में लगातार 11 दिन तक बारिश होने का रिकॉर्ड भी बना है। 7 अप्रैल से 17 अप्रैल तक प्रदेश में लगातार बारिश हुई है। अब फिर से प्रदेश भीग रहा है। पिछले छह दिन से बारिश हो रही है। 27 अप्रैल तक बारिश होने का अनुमान है। दूसरे सिस्टम से लगातार छह दिन तक बारिश हो चुकी है।

अप्रैल में 42 डिग्री पार पहुंचा टेम्प्रेचर

बारिश-आंधी के बीच गुरुवार को प्रदेश के कई शहरों में गर्मी का असर रहा। नौगांव सबसे गर्म रहा। यहां दिन का टेम्प्रेचर 42.1 डिग्री दर्ज किया गया। शिवपुरी और गुना में पारा 42 डिग्री रहा। टीकमगढ़, खजुराहो, सीधी, दमोह, रीवा, सतना में भी पारा 41 डिग्री के पार रहा।

बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 40.2 डिग्री, इंदौर में 39.2 डिग्री, ग्वालियर में 41 डिग्री, जबलपुर में 40.4 डिग्री और उज्जैन में टेम्प्रेचर 38.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

आशिक का जनाजा है, जरा धूम से निकले; गुना वालों को सिंधिया-केपी दो नेता मिलेंगे

अमित शाह बोले- दिग्विजय की राजनीति से परमानेंट विदाई करो

अशोकनगर, राजगढ़ (नप्र)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को मध्यप्रदेश के दौरे पर थे। सबसे पहले अशोकनगर पहुंचे। यहां पर गुना सीट से भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थन में चुनावी रैली को संबोधित किया। उन्होंने कहा गुना वालों आपको दो-दो नेता मिलेंगे। ज्योतिरादित्य भी मिलेंगे और केपी यादव भी मिलेंगे। केपी यादव ने इस क्षेत्र की बहुत अच्छी सेवा की है, उनकी चिंता आप मुझ पर छोड़ देना, आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है।

अमित शाह ने कहा- गुना वालों आपका यह महाराज विकास को लेकर सबसे ज्यादा समर्पित है। सिंधिया घराने ने इस क्षेत्र का लालन-पालन अपने बच्चे जैसे किया है। मैं राजा साहब के लिए वोट मांगने आया हूं। सिंधिया मेरे मित्र भी हैं, भाजपा के वरिष्ठ नेता भी हैं। इन्हें जिताते हुए यह याद रखना, सिंधिया को दिया एक वोट नरेंद्र मोदी को जाएगा।

इसके बाद वे दिग्विजय के गढ़ राजगढ़ के खिलचीपुर में चुनावी सभा करने पहुंचे। यहां पर बीजेपी प्रत्याशी रोडमल

भगवा आतंकवाद, शर्म करो दिग्गी राजा

दिग्गी राजा की सलाह से राहुल बाबा ने अपने घोषणा पत्र में शामिल किया है कि कांग्रेस सरकार आएगी तो मुस्लिम पर्सलन लॉ लाएगी। सरकार तो आनी नहीं है। फिर भी क्या ट्रिपल तलाक फिर से लाना चाहिए क्या। शरिया कानून से देश चलना चाहिए क्या। कांग्रेस मुस्लिम पर्सनल लॉ लाकर पिछले दरवाजे से शरिया कानून लाना चाहती है। ये दिग्गी राजा इनसे भी दो कदम आगे हैं..भगवा आतंकवाद। शर्म करो दिग्गी राजा। **ये आतंकवादी हाफिज सईद को साहब कहते है**-आतंकवाद को देखने के आपके चश्मे अब बेकार हो गए हैं। ये पाकिस्तान के आतंकवादी हाफिज सईद को साहब कहते हैं। ये हाफिज आपका साहब होगा।

नागर के समर्थन में सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राजगढ़ को बंटाढार करना है क्या? दिग्गी राजा क्या मैंडेट मांगने आए थे। भागकर भोपाल चले गए, अब राजगढ़ आए हो। दिग्गी राजा के साथ बंटाढार शब्द जुड़ गया है। यहां बंटाढार करना है क्या।

उन्होंने कहा अब समय आ गया है इन्हें राजनीति से परमानेंट विदाई देने का। दिग्विजय की विदाई आपको करना है। आशिक का जनाजा है, जरा धूम से निकले। सम्मान जैसी लीड से हराकर उनकी विदाई करना। उन्हें घर पर बिठाने का काम राजगढ़ वाले करें, यही कहने आया हूं।

खिलचीपुर में शुक्रवार सुबह 9 से 9:30 बजे तक तेज बारिश और आंधी चली। इससे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की सभा स्थल पर डोम के पीछे लगा टेंट उड़ गया। टेंट में लगा माइक भी गिर गया था।

डॉ. मनोज तिवारी की पुस्तक 'मनोविज्ञान एवं शिक्षण' का विमोचन

- **भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष संजय सिंह बबलू की मौजूदगी में हुआ विमोचन**

भदोही। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के एम्फी थियेटर में भारतीय कुश्ती संघ द्वारा आयोजित 2024 फेडरेशन कप (सीनियर) के समापन समारोह में डॉ मनोज तिवारी वरिष्ठ परामर्शदाता एआरटी सेंटर, एस एस हॉस्पिटल, आईएमएस, बीएचयू द्वारा लिखित पुस्तक 'मनोविज्ञान एवं शिक्षण' का विमोचन हुआ।

भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष संजय सिंह बबलू, संतुष्टि अस्पताल के निदेशक एवं प्रख्यात यूरोलॉजिस्ट डॉ संजय गर्ग, मनीष सिंह राष्ट्रीय महासचिव अपना दल (एस), वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ सतीश चंद्र राय, वरिष्ठ समाजसेवी आलोक सिंह अधिवक्ता, काशी विद्यापीठ छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष व पूर्व महानगर अध्यक्ष भारतीय जनता युवा मोर्चा सत्येंद्र सिंह, गोपाल सिंह अधिवक्ता एवं भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा महानगर उपाध्यक्ष ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष श्री संजय सिंह बबलू ने कहा कि मनोविज्ञान विषय अत्यंत उपयोगी है, पहलवानों के लिए भी अपने संवेग पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है अन्यथा वे अपने सर्वोत्तम प्रदर्शन करने से पीछे रह जाते हैं। सतत मनोवैज्ञानिक परामर्श खिलाड़ियों के आत्मविश्वास व मनोबल को बनाए रखने में उपयोगी होता है। उन्होंने डॉ मनोज तिवारी को शुभकामना दी तथा अन्य समाज उपयोगी पुस्तकों की रचना के लिए शुभकामना दी।

विदित हो कि डॉ मनोज तिवारी काशी के जाने-माने मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाविद हैं उन्होंने मनोविज्ञान की 10 पुस्तकों की रचना की है तथा सामाजिक जागरूकता हेतु राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं एवं समाचार- पत्र में नियमित लेख लेखन का कार्य भी करते हैं। इस अवसर पर वाराणसी क्लस्टर प्रोग्राम मैनेजर मनीष सिंह, एआरटी सेटर, बीएचयू के चीफ फार्मासिस्ट पवन कुशवाहा, भाजपा नेता प्रकाश सिंह तथा देश के विभिन्न राज्य से आए हुए पहलवान उपस्थित रहें।

खंडवा में दो दिन से लापता युवक का शव मिला

- **पुलिस थाने के पास पदमकुंड में फांसी लगाई; पेट्रोल पंप पर कर्मचारी था युवक**

खंडवा (नप्र)। खंडवा में दो दिन से लापता युवक का शव मिला है। युवक का शव पुलिस थाने के नजदीक पदमकुंड में फांसी के फंदे पर लटका मिला। वह पेट्रोल पंप पर कर्मचारी था। दो दिन से घर नहीं लौटने पर पत्नी ने थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई थी।

शुक्रवार सुबह पदमकुंड मंदिर के पुजारी को एक युवक फांसी पर लटका दिखाई। पुजारी ने इस बारे में सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान दो दिन पहले गुमशुदा युवक के रूप में की।

थाना पदमनगर पुलिस के मुताबिक, सिंघाड़ तलाई निवासी प्रकाश पिता रामू पंवार का शव बरामद किया है। फॉरेंसिक एक्सपर्ट के मुताबिक, प्रकाश की लाश दो दिन पुरानी प्रतीत हो रही है। उसने फांसी लगाई है, मामला आत्महत्या का है। फिलहाल कारण अज्ञात है।

पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। परिजन के बयान लेकर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मृतक प्रकाश और उसका भाई दोनों सिविल लाइन स्थित रणजीत होटल से सटे पेट्रोल पंप पर नौकरी करते थे।

सागर में महिलाओं ने पुलिस पर फेंकी चूड़ियां

मारपीट में युवक की मौत के बाद प्रदर्शन, 4 घंटे शव रखकर किया चक्काजाम

सागर (नप्र)। सागर के रहली में मारपीट के बाद हुई युवक की मौत मामले में शुक्रवार को बवाल हो गया। मृतक के परिवार वालों ने सड़क पर शव रखकर 4 घंटे तक चक्काजाम किया। परिवार वालों ने पुलिस पर कार्रवाई में पक्षपात करने का आरोप लगाया और दोषियों पर सख्त कार्रवाई कर जल्द गिरफ्तार करने की मांग की। इसी दौरान गुस्साई महिलाओं ने पुलिस पर चूड़ियां फेंकी। विरोध-प्रदर्शन होते देख मौके पर भारी पुलिस बल पहुंचा। अधिकारियों ने प्रदर्शन कर रहे लोगों को समझाइश देकर शांत कराने की कोशिश की। लेकिन वह मृतक की मां की शिकायत पर एफआईआर दर्ज करने पर अड़ गए। बाद में जांच का आश्वासन मिलने के बाद दोपहर 4 बजे प्रदर्शन को समाप्त कर दिया गया। यह प्रदर्शन दोपहर 12 बजे से चल रहा था।

पुलिस के अनुसार फरियादी आशिक पिता शेख जलील निवासी वार्ड क्रमांक-11 पंडलपुर ने शिकायत की थी। शिकायत में बताया था कि गुरुवार की रात वह घर से पान की दुकान पर जा रहा था, तभी रास्ते में लालू उर्फ रविकांत ठाकुर मिला। वह गाली-गलौज करने लगा। इसी दौरान उसका भाई कपिल और पिता मुन्ना ठाकुर आ गए। तीनों ने मिलकर मेरे साथ मारपीट की।

विवाद होते देख शाहरुख पिता तोतू उर्फ रशीद उम्र 24 साल निवासी पंडलपुर बीचबचाव करने के लिए आया। इसी दौरान आरोपियों ने मिलकर शाहरुख के साथ जमकर मारपीट की। मारपीट में शाहरुख गंभीर घायल हुआ। उसे घायल अवस्था में रहली अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां इलाज के बाद जिला अस्पताल रैफर कर दिया गया। जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते में शाहरुख की मौत हो गई। मामले की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी रविकांत ठाकुर, कपिल ठाकुर, मुन्ना ठाकुर व अन्य के खिलाफ हत्या समेत अन्य धाराओं में प्रकरण दर्ज किया। शव का पंचनामा बनाया।

शुक्रवार सुबह पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। शव परिवार वालों को सौंप दिया, जिसके बाद परिवार वाले शव लेकर निकले और दोपहर 12 बजे सड़क पर शव रखकर चक्काजाम कर दिया। सूचना पर भारी पुलिस बल मौके पर पहुंचा। पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने चक्काजाम कर रहे लोगों को समझाइश दी।

पं. धीरेंद्र शास्त्री के भाई ने टोलकर्मियों को पीटा

- **छतरपुर में गाड़ी रोककर टोल मांगा तो साथियों के साथ हमला किया, एफआईआर दर्ज**

छतरपुर (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के भाई सौरव गर्ग उर्फ शालिग्राम शास्त्री ने छतरपुर में टोलकर्मियों से मारपीट की। टोल मांगने पर उसने अपने सहयोगियों के साथ हमला किया। पुलिस ने शालिग्राम शास्त्री समेत 10 के खिलाफ केस दर्ज किया है। सभी आरोपी फरार हैं। घटना छतरपुर के गुलगंज थाना क्षेत्र में सागर रोड स्थित मंगवारी टोल प्लाजा पर गुरुवार रात की है। एसपी अगम जैन ने बताया कि शालिग्राम देर रात अपने साथियों के साथ किसी शादी समारोह में शामिल होने जा रहा था। इसी दौरान टोल प्लाजा पर उसकी गाड़ी को रोककर टोल मांगा गया, इस बात पर वो भड़क गया और मारपीट कर दी। टोलकर्मियों ने जीतू तिवारी, लोकेश उर्फ शालिग्राम गर्ग का नाम बताया था। पुलिस ने 10 लोगों पर केस दर्ज किया है।

खजुराहो में सुबह के समय वोटिंग देर से शुरू होने पर वीडी शर्मा ने नाराजगी जताई

भोपाल/होशंगाबाद/खजुराहो/रीवा/दमोह (नप्र)। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में मध्यप्रदेश की 6 सीटों सतना, रीवा, दमोह, खजुराहो, टीकमगढ़ और होशंगाबाद पर वोटिंग हुई। म.प्र. में 6 सीटों पर 58.35 प्रतिशत वोटिंग हुई । सबसे ज्यादा होशंगाबाद सीट पर 55.79 प्रतिशत और सबसे कम रीवा सीट पर 37.55प्रतिशत पर मतदान हुआ है।

इससे पहले सुबह के समय मतदान केंद्रों पर वोटर्स की लंबी-लंबी लाइन नजर आई। लेकिन जैसे जैसे दिन चढ़ता गया और गर्मी बढ़ी तो पोलिंग बूथों पर मतदाताओं की संख्या में कमी दिखी।

हालांकि हर वर्ग के वोटर ने मतदान को लेकर उत्साह दिखाया। बुजुर्गों से लेकर महिलाओं और युवाओं ने वोटिंग में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इतना ही नहीं शादी की रस्मों के बीच दूल्हा-दुल्हन भी वोट डालते नजर आए।इससे पहले खजुराहो में सुबह के समय वोटिंग देर से शुरू होने पर वीडी शर्मा ने नाराजगी जताई। उधर, दमोह में पूर्व मंत्री जयंत मलैया ने पोलिंग टीम को फटकार लगा दी।

खजुराहो में दो घंटे रूका रहा मतदान, वोटर्स का सेक्टर प्रभारी से विवाद

नर्मदापुरम में भाजपा महामंत्री ने ड्यूटी पर तैनात सब इंस्पेक्टर को बहस के बाद देख लेने की धमकी दे डाली। दमोह में ड्यूटी पर तैनात एक वनकर्मी को हार्ट अटैक आ गया। रीवा, सतना, दमोह और नर्मदापुरम में कुछ जगह ग्रामीणों ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया। बॉलीवुड एक्टर आशुतोष राणा ने नरसिंहपुर के गाडरवाड़ा में वोट डाला। सेकंड फेज की इन 6 सीटों पर 1 करोड़ 11 लाख 62 हजार 460 मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग कर करेंगे,जिनके घर शादी का कार्यक्रम है, वे मतदाता बिना लाइन में लगे वोट कर सकेंगे। मतदान सुबह 7 बजे से शुरू हुआ जो शाम 6 बजे तक चला।